लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संवाद

विभागीय वार्षिक गृह-पत्रिका

अंक-चतुर्थ

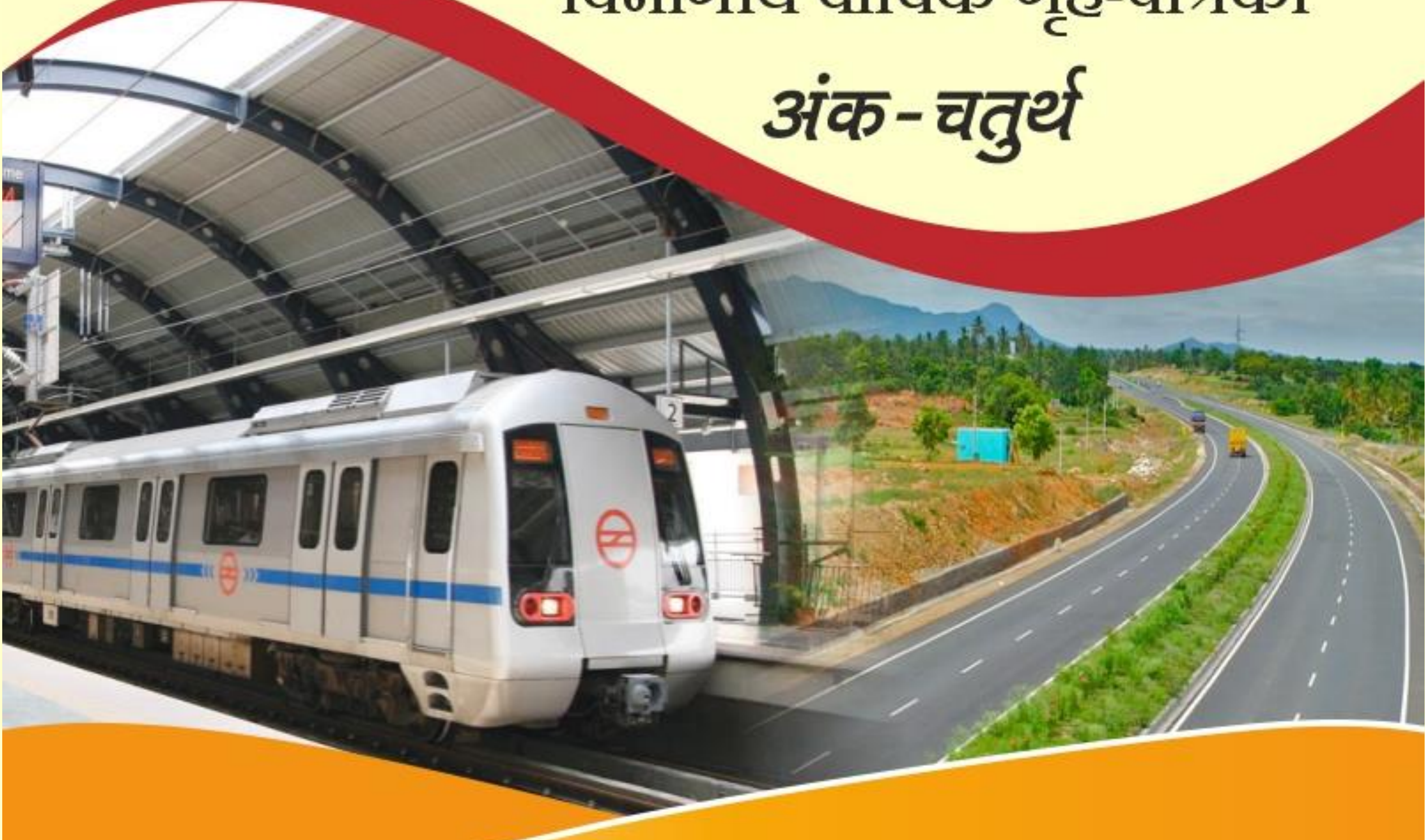

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (अवसंरचना),

तीसरी मंजिल, ए-विंग, इंद्रप्रस्थ भवन, आईपी एस्टेट, नई दिल्ली - 110002

संवाद परिवार

श्री दीपक कपूर
महानिदेशक लेखापरीक्षा (अवसंरचना)

श्री अजय कुमार कृपाशंकर
उप निदेशक (प्रशासन)

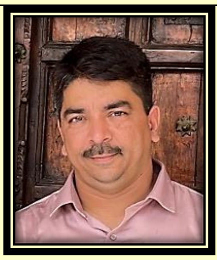

श्री विक्की भारती
व.ले.प.अ. (प्रशासन)

सुश्री पूनम शर्मा
हिंदी अधिकारी

सुश्री आरती
वरिष्ठ अनुवादक

सुश्री अनुराधा
कनिष्ठ अनुवादक

गृह मंत्री जी का संदेश

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गयी थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आज़ादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आंदोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं, ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किए हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम–काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिंदी का काम–काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में गृह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय समय पर किए गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई, 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को

गृह मंत्री जी का संदेश

प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11 वां खंड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13–14 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस–2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जन–साधारण के लिए **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा–भाषी अपनी–अपनी मातृभाषाओं से निःशुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई–महाशब्दकोश' में 90 हज़ार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और 'ई–सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हज़ार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी **'बृहत शब्दकोश'** के निर्माण पर भी काम शुरु किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यहीं पुष्पित पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्द–संपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। **राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।**

प्रिय देशवासियो ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश–विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्बोधन देते हैं जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आज़ादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2022

(अमित शाह)

प्राक्कथन

मुख्य संरक्षक की कलम से...................................

मुझे अपार हर्ष हो रहा है कि हमारे कार्यालय की वार्षिक पत्रिका 'संवाद' के चतुर्थ अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। जहाँ एक ओर विभागीय पत्रिकाओं को प्रकाशित करने का मूल उद्देश्य राजभाषा के प्रचार-प्रसार को प्रेरणा एवं संबल प्रदान करना है वहीं दूसरी ओर कार्यालयीन कार्यों में सरल हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना भी है। हिंदी एक अद्भुत क्षमता वाली वैज्ञानिक भाषा है, इसके मूल में विश्व की प्राचीनतम समृद्ध भाषा संस्कृत है और अन्य भारतीय भाषाएं इसकी ताकत हैं। हिंदी, भारतीय संस्कृति के सभी तत्वों की अपनी भाषा में अभिव्यक्ति का माध्यम है। इतनी समृद्ध भाषा होते हुए भी हम हिंदी का प्रयोग करते हुए झिझकते हैं। आज भी हम इस अपार क्षमता वाली भाषा हिंदी को कविता, चुटकुले और पहेलियों की भाषा ही समझते हैं, इसे ऊपर नहीं उठने देना चाहते हैं, यह विडंबना है। जहाँ तक इस पत्रिका में संकलित रचनाओं का प्रश्न है, तो इस कार्यालय में कार्यरत कार्मिकों की सृजनशीलता का अनूठा संगम बनाती हुई प्रतीत हो रही है। मैं हिंदी के इन नव लेखकों को प्रोत्साहन देने और सुधी पाठकों तक इतनी सुंदर पठनीय सामग्री पहुंचाने के इस प्रयास के लिए संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि आप सभी के समेकित प्रयास से **'संवाद'** के आगामी अंक उन्नत शिखर पर आरूढ़ होगें।

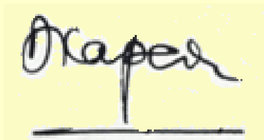

दीपक कपूर
महानिदेशक

संरक्षक की कलम से.........................

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि इस कार्यालय की गृह पत्रिका **'संवाद'** के चतुर्थ अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इसकी सफलता हम सभी पर निर्भर करती है। आज राजभाषा हिंदी का जो व्यापक एवं विस्तृत रूप देखने को मिलता है उसमें सभी भारतीय भाषाओं एवं अंग्रेज़ी के प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है। आज हिंदी भाषा को समयानुसार गति देने हेतु शब्द ग्रहण करना अपेक्षित हो गया है ताकि हिंदी का प्रचार-प्रसार संपूर्ण राष्ट्र एवं अन्य देशों में भी हो सके। आज हम यदि अंग्रेज़ी को देखें तो उसमें विश्व की अनेक भाषाओं के शब्द मिल जायेंगें। इसी के फलस्वरूप विश्व समुदाय ने इसे अपनाया। यही प्रक्रिया हमें हिंदी के विकास के लिए भी अपनानी है। राजभाषा नियमों में भी बोलचाल की सरल हिंदी अपनाने की बात कही गई है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि हम शासकीय सेवक हैं और हमारा कार्य आम जनता से जुड़ा है जो बहुत अधिक अंग्रेज़ी का प्रयोग नहीं करते हैं। वे आम बोलचाल एवं कार्यप्रणाली में ज्यादातर हिंदी या अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग करते हैं। अतः हमारा कर्तव्य बनता है कि हम उनसे पत्र व्यवहार करते समय अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करें ताकि वे बिना हिचक एवं भय के हमसे जुड़ सकें एवं हम भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को नियत समय-सीमा के भीतर पूरा कर पाएं।

अतः आप सभी से मेरा आग्रह है कि सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें तथा दूसरों को भी प्रेरित करें। साथ ही तमाम अटकलों पर विराम लगाते हुए राजभाषा हिंदी के प्रति स्नेह एवं सम्मान की अभिव्यक्ति करें।

अजय कुमार कृपाशंकर
उप निदेशक

संपादकीय

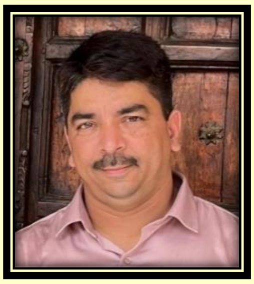

विक्की भारती
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

पूनम शर्मा
हिंदी अधिकारी

प्रिय पाठकों............

हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका **'संवाद'** के चतुर्थ अंक को आप सब के सम्मुख रखते हुए हमें अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। इस अंक के प्रकाशन तक पहुँचने में हमें अपने कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का पूर्ण सहयोग मिला और आशा है कि आगे भी सहयोग मिलता रहेगा। हिंदी भाषा को हमारे देश में वह स्थान नहीं मिला है जिसकी यह हकदार है। भाषा कभी ऊँची अथवा नीची नहीं होती है। भाषा एक समाज की संस्कृति एवं विकास का मूल तत्व होती है। आज कई देश अपनी मातृभाषा में ही विज्ञान की किताबों का प्रकाशन कर आगे बढ़ रहे हैं। इसमें चीन, रूस, जापान आदि देश हैं जिन्होंने अपनी मातृभाषा को विदेशी भाषा से अधिक सम्मान दिया और विकास किया। हम भारतवासियों को भी आत्म-सम्मान के साथ अपने देश की भाषा का विकास करना चाहिए। हमारा देश इतना विशाल है कि इसमें सैकड़ों भाषाएं बोली जाती हैं। इन सभी भाषाओं को तो राजभाषा नहीं बनाया जा सकता किंतु जो भाषा अधिकांश लोगों को समझ में आती है, वह भाषा हिंदी है। इसीलिए, संविधान निर्माताओं ने, चाहे वे किसी भी प्रांत के रहे हों, हिंदी का समर्थन किया। इसी क्रम में, इस कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के अथक प्रयासों के मूर्त स्वरूप माँ भारती को हिंदी पत्रिका **'संवाद'** के रूप में श्रद्धांजलि है। अंत में सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल के सभी सदस्यों को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं देते हुए पाठकों से विनम्र निवेदन है कि आप सभी अपने बहुमूल्य विचार एवं सुझाव हमें अवश्य भेजें। गृह-पत्रिका **'संवाद'** उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ समर्पित है।

सम्पादक मण्डल

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	वो बचपन की यादें	श्री राजेश कुमार सिंह	1-3
2.	मेरी मेघालय यात्रा	सुश्री पूनम शर्मा	4-9
3.	तेरा भी सम्मान होगा	श्री राजेश कुमार सिंह	10
4.	नब्बे का दौर	श्री आशीष कुमार	11-12
5.	शाकाहारी बनें	श्री अमित कुमार	13
6.	वर्तमान में जीना	सुश्री मेघा कौशिक	14-15
7.	कर्ण कृष्ण संवाद	डॉ अनुराधा जोशी	16-19
8.	एक और परिवार	श्री मनोज मधुर कस्तूर	20-21
9.	वो चौदह दिन	श्री विनोद शर्मा	22-23
10.	ज़िंदगी की उत्कंठा	सुश्री संध्या मिश्रा	24
11.	हुई है वही जो राम रची राखा	सुश्री मेघा कौशिक	25-26
12.	गज़लों का संकलन	श्री राजेश रंजन	27-29
13.	ज़रूरत उस बदलाव की	श्री मनोज मधुर कस्तूर	30-33
14.	ईश्वर तथा कर्म का नियम	श्री अमित कुमार	34-36
15.	हिंदी का शालीनता एवं सौम्यता	श्री राजेश रंजन कुमार	37-39
16.	सहिष्णुताः एक सभ्य समाज की आवश्यकता	सुश्री संध्या मिश्रा	40-41
17.	माँ	श्री राजेश रंजन	42-43
18.	आओ हम सब संवेदनशील बने	श्री मनोज मधुकर कस्तूर	44
19.	वो सात समंदर पार	श्री रणजीत कुमार स्वाई	45
20.	विशिष्ठ पल	-	46
21.	हिंदी कार्यशाला	-	47
22.	हिंदी पखवाडा 2022 कि कुछ झलकियाँ	-	48-53
23.	सुरत (गुजरात) में आयोजित द्वितीय राजभाषा सम्मेलन की कुछ झलकियां	-	54
24.	आपके प्रोत्साहन पत्र	-	55-65

राजेश कुमार सिंह
स.ले.प.अ

वो बचपन की यादें

साथियों, मैं इस लेख में हमारे बचपन से जुड़ी वो तमाम मधुर यादें, वो ख़ुशी के क्षण, वो शैतानी भरी शरारतें इत्यादि का वर्णन प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूँ जिसे पढ़ने के बाद एक बार फिर हमारे बचपन की यादें ताज़ा हो जाएंगी। हर किसी को अपना बचपन याद आता है। हम सबने अपने बचपन को जिया है। इस संसार में शायद ही कोई ऐसा इंसान होगा जिसे बचपन याद नहीं आता हो। यदि आज हमसे कोई ये पूछे कि अगर आपकी कोई एक इच्छा पूरी की जा सकती है तो वो इच्छा क्या होगी? हम में से ज़्यादातर लोगों का ये जवाब होगा कि हम फिर से अपने बचपन में जाना चाहेंगे क्योंकि हमारा बचपन हमारे जीवन के अनमोल समय से जुड़ी यादों का अनोखा संसार है।

बचपन की अपनी मधुर यादों में माता-पिता का स्नेह, भाई-बहन के लड़ाई-झगड़े एवं प्यार, यार दोस्तों के साथ बिताए समय, स्कूल के दिनों की यादें इत्यादि प्रमुख हैं। यार दोस्तों के साथ योजना बनाकर आम के पेड़ पर चढ़कर चोरी से आम तोड़कर खाना, खेतों से गन्ने तोड़कर चूसना और खेत के मालिक के आने पर नौ दो ग्यारह हो जाना हर किसी को याद है। पहले चोरी करना और बाद में पकड़े जाने पर साफ़ झूठ बोलना बचपन की यादों में शुमार है। बगीचों में दोस्तों के साथ खेलना, हाथ पैर में मिट्टी लगना, चोट लगने पर या ज़ख्म होने पर माँ की डाँट फटकार तथा माँ का प्यार भरा स्पर्श किसे याद नहीं है। इन शैतानी भरी यादों का भण्डार है हमारा बचपन। जब हम खेलते-खेलते या पढ़ते-पढ़ते कहीं भी सो जाते थे लेकिन सुबह में जब नींद खुलती थी तो खुद को बिस्तर पर पाते थे। उस समय हमें बहुत ही आश्चर्य होता था कि हम तो छत पर सोए थे, बिस्तर पर कैसे आ गए? आज हमें समझ में आता है कि वो माँ का प्यार था, जो पहले हमें बिस्तर पर सुलाती थी, फिर खुद सोती थी। हम सब अपने बचपन में बहुत शरारत करके, शोरगुल करके अपने परिवार के सदस्यों को परेशान किया

करते थे, जिसके बदले हमें डाँट सुननी पड़ती एवं कभी-कभी मार भी पड़ती थी, फिर भी हमारी

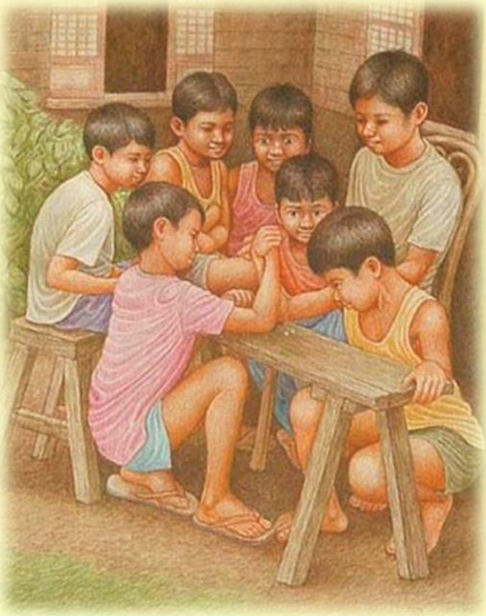

शरारत कम नहीं हुई और न ही हमारे लिए उनका प्यार कम हुआ करता था। हममें से अधिकतर साथियों का बचपन गिल्ली-डंडा, लुक्का-छिपी, कबड्डी, फुटबाल तथा क्रिकेट खेलते एवं पतंग उड़ाते बीता होगा। इन खेलों में जो मानसिक एवं शारीरिक आनंद आता था वो आज के डिजिटल गेम में कहाँ? इन खेलों को खेलने के बाद हमें अलग से कोई व्यायाम या योगा करने की ज़रूरत नहीं होती थी। आज के समय के बच्चों के बचपन कंप्यूटर एवं मोबाइल गेम खेलने में बीत रहे हैं जो अनेक बीमारियों के कारण भी बनते जा रहे हैं। हमने तो दादा-दादी की आँखों में चश्मे लगे देखे हैं, मगर आज के ज़्यादातर बच्चों में तो बचपन में ही चश्मे लग जाते हैं। जो आनंद पहले के खेलों में आता था वो अब डिजिटल गेम में कल्पना भी नहीं की जा सकती है। ये देसी खेल आजकल के बच्चों के मनोरंजन से काफी दूर होते जा रहे हैं क्योंकि वीडियो गेम, टीवी, कंप्यूटर गेम, मोबाइल गेम इत्यादि ने इन खेलों की जगह ले ली है। आजकल के बच्चों को डिजिटल गेम ज़्यादा पसंद है और ये सारी सुविधायें आज हमारे घर के अन्दर ही उपलब्ध हैं। खुले मैदान में खेलने से जो शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है वो अब नदारद सा होता जा रहा है। हममें से अधिकतर अपने बचपन में पापा द्वारा साइकिल पर घुमाया जाना कभी नहीं भूल सकते। जब पापा कहीं भी जाने के लिए साइकिल निकालते, तो हम भी उनके साथ जाने के लिए तैयार हो जाते, तब पापा भी प्यार से हमें साइकिल पर घुमा देते। जब हम थोड़ा और घुमाने की ज़िद करते तो वो प्यार से कहते "बेटा! अभी मुझे देर हो रही है, शाम को आऊँगा तो घुमा दूँगा" और हम शाम होने का इंतज़ार भी किया करते थे। आज मोटर साइकिल और कार के ज़माने में वो साइकिल वाली यादों का अहसास अब कहाँ?

पहले बचपन में हमारी पढ़ाई-लिखाई चीनी-मिट्टी की स्लेट पर हुआ करती थी जिस पर हम लिख-लिखकर याद करते थे और फिर मिटा देते थे। एक बार गलती होने पर मिटाकर

एवं सुधार कर फिर से पढ़ना-लिखना सीखते थे तथा कुछ बच्चे तो कई बार अपने माता-पिता को भी पढ़ा दिया करते थे। हमारे बचपन में पढ़ाई का पाठ्यक्रम बहुत कम हुआ करता था, जिसकी वजह से कम समय में ही अपना गृह कार्य पूरा करके दोस्तों के साथ खेलने चले जाते थे। आजकल के बच्चों को केजी-वन से ही कॉपी पर पढ़ना-लिखना सिखाया जाता है। पहले कुछ ही विषयों की पढ़ाई करनी पड़ती थी, जिससे गृह कार्य भी कम हुआ करता था। आजकल के बच्चों को शुरू से ही बहुत से विषयों की पढ़ाई करनी पड़ती है, जिससे उनका गृह कार्य भी बहुत ज़्यादा हो जाता है। यही कारण है कि आजकल के बच्चों पर पढ़ाई-लिखाई का काफी तनाव दिखाई देता है।

बचपन में दादा-दादी एवं नाना-नानी काफी किस्से कहानियाँ सुनाया करते थे, जिनमें ज़्यादातर रामायण, महाभारत तथा अन्य राजा-महाराजाओं की कहानियाँ हुआ करती थीं, जिसे सुन-सुनकर बच्चों में संस्कारों का बीजारोपण हो जाया करता था। उनकी कहानी मनोरंजन के साथ-साथ सीख भी देती थी। आज यह दुर्लभ होता जा रहा है क्योंकि वर्तमान में न तो बच्चों को इसकी ज़रूरत है ओर न ही दादा-दादी एवं नाना-नानी इसमें अभिरुची रखते हैं। मोबाइल फोन और टीवी ने इसकी जगह ले ली है। गाँव में बिजली कम आने के कारण गर्मियों में सब लोग छत पर ही सोते थे और प्राकृतिक हवा का आनंद लेते थे। अब एसी व कूलर में वो प्राकृतिक हवा का आनंद कहाँ? पहले के बचपन की तुलना में अब का बचपन काफी अलग हो गया है, लेकिन फिर भी, बचपन तो बचपन ही होता है। यादें तो जुड़ी ही होती हैं। हमें उम्मीद है कि यह लेख पढ़कर आपके भी बचपन की यादें ताज़ा हो गई होंगी।

पूनम शर्मा
हिंदी अधिकारी

मेरी मेघालय यात्रा

कोरोना के दो वर्ष के कठिन कारावास के उपरांत जब धीरे-धीरे जीवन सामान्य पटरी पर लौटने लगा तो सबने राहत की साँस ली, लोगों ने घर से बाहर निकलना शुरू किया। मैंने और मेरी मित्र मण्डली ने भी सोचा क्यों न कहीं भ्रमण पर निकला जाए, काफी समय हो गया था घर में कैद हुए, किंतु जाएं कहाँ? स्थान का निर्धारण नहीं हो पा रहा था, अंततः सर्वसम्मति से इस नतीजे पर पहुँचे कि उत्तर पूर्व राज्य मेघालय चला जाए। मेघालय अर्थात 'मेघों का घर' जिसे अपनी खूबसूरती के कारण 'स्टाकलैण्ड ऑफ ईस्ट' भी कहा जाता है। मेघालय गारो, खासी और जयंतिया पहाड़ियों से घिरा एक बेहद सुंदर व शांत राज्य है। फिर क्या था, इंटरनैट पर थोड़ी रिसर्च के उपरांत टिकट बुक कर ली गई। चूँकि मेघालय जाने का रास्ता गुवाहाटी से गुज़रता है, वास्तव में सभी उत्तरपूर्वी राज्यों के लिए यह एक प्रमुख मार्ग है, जिस वजह से गुवाहाटी को 'गेटवे ऑफ नार्थ ईस्ट' भी कहा जाता है। दिल्ली गुवाहाटी राजधानी ट्रेन से अपना सफर तय कर हम गुवाहाटी पहुँचे। बत्तीस घण्टे का सफर दोस्तों के साथ कब हँसते-खलते, गाते-बजाते बीत गया पता ही नहीं चला। गुवाहाटी पहुँचते-पहुँचते शाम के आठ बज चुके थे, अतः हमने उस रात गुवाहाटी में ही रूकने का निर्णय लिया। अगले दिन प्रातः जल्दी उठ कर हमने एक शेयर टैक्सी से अपना सफर मेघालय की राजधानी शिलांग के लिए आरंभ किया। रास्ते में एक प्रसिदध् भोजनालय में रुक कर पहले पेट पूजा की गई उसके बाद यात्रा बदसतूर चलती रही। गुवाहाटी से शिलांग की दूरी लगभग 100 कि.मी. की है तथा दो शहरों के बीच जो प्राकृतिक दृश्य देखने को मिलते हैं वो निश्चित तौर पर आपके सफर को यादगार बना देते हैं। इसी मार्ग पर आगे चलकर बहुत ही मनमोहक झील पड़ती है जिसे 'उमियम लेक' कहा जाता है। स्थानीय लोग इसे 'बड़ा पानी' के नाम से पुकारते हैं।

220 वर्ग कि.मी क्षेत्रफल में फैली इस झील का नज़ार चित्ताकर्षक था। हरे वृक्षों की झटा और छोटी पहाड़ियों के बीच घिरी यह झील आपको अपने सौंदर्य के आकर्षण में बांध लेती है। झील में स्पीड मोटर बोट का आनंद लेकर व इन दृश्यों को अपने फोन और आँखों में कैद कर हम आगे बढ़ गए। इसके उपरांत शिलांग में स्थित प्रसिद्ध 'एलीफेंट फॉल्स' जाकर हमारी गाड़ी ने विराम लिया, झरने का नाम इसके तल पर एक चट्टान के कारण पड़ा है, जो हाथी की तरह दिखाई देती है। इन अद्भुत झरनों से तीन अलग-अलग झरने हरे-भरे हरियाली से आच्छादित हैं जो आस-पास के क्षेत्र में चार चाँद लगा देते हैं। इसके बाद हम चल पड़े शिलांग 'डॉन बॉस्को' संग्रहालय जो मेघालय की जनजातीय संस्कृति और सांस्कृतिक इतिहास के बारे में जानने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है, जो स्वदेशी संस्कृतियों से जुड़ा एशिया का सबसे बड़ा संग्रहालय माना जाता है। इसके उपरांत हमारा रूख शहर के बीचों-बोचों स्थित 'वार्डस लेक' की ओर हुआ, जो शहर के मध्य एक खूबसूरत बगीचा है। 'वार्डस लेक' की आकृति घोड़े की नाल के आकार में है, यहाँ पर हमने बोटिंग का मज़ा लिया तथा यहाँ की स्थानीय पोशाक में तस्वीरें भी खिंचवाईं। इसके उपरांत वहाँ के प्रसिद्ध 'गोल्फ कोर्स' मैदान को देखा जो काफी बड़े क्षेत्र में फैला एक घास का मैदान है जहाँ स्थानीय लोग अक्सर अपने पूरे परिवार के साथ पिकनिक मनाने आते हैं।

शिलांग शहर का प्रसिद्ध 'कैथ्रिडल ऑफ मैरी हैल्प ऑफ क्रिशचैनिटी' चर्च बहुत ही खूबसूरत चर्च है जिसे वर्ष 1936 में बनाया गया था। नीले रंग में रंगा यह चर्च शांति, प्रेम और सुंदरता का अनोखा संगम है। यहाँ की शांति में आकर मनुष्य का जाने का मन नहीं करता। इसके अतिरिक्त शहर में एक छोटा सा 'ज़ू' भी है, इसमें ज़्यादा जानवर तो नहीं है, किंतु परिवार के साथ घूमने के लिए एक अच्छा स्थान अवश्य है। यह सब देखकर हम शाम को शिलांग के प्रसिद्ध 'पुलिस बाज़ार' गए, शिलांग में स्थित यह एकमात्र बड़ा बाज़ार है। जहाँ पर स्थानीय सब्ज़ियों, फलों से लेकर ज़रूरत की तकरीबन सारी वस्तुएँ उपलब्ध है। मेघालय अपने हस्तशिल्प के लिए भी देशभर में प्रसिद्ध है। यहाँ की बाँस और बेंत से बनी वस्तुएँ, जैसे बाँस की टोकरियाँ, स्टूल आदि बहुत पसंद की जाती हैं। सारा दिन शहर घूमने के उपरांत हम बहुत थक गए थे तो खाना खाकर अगले दिन के लिए ऊर्जा एकत्र कर सोने चले गए।

हमारे तीसरे दिन की शुरूआत दुनिया की सबसे अधिक वृष्टि वाले क्षेत्र चेरापूंजी में प्रस्थान से हुई। शिलांग से चेरापूंजी की दूरी लगभग 54 कि.मी. की है। रास्ते में कई चाय के बागन भी दिखे जहाँ थोड़ी देर रूक कर हमने फोटो खिंचवाई। चाय के बागानों को हमेशा हिंदी फिल्मों में ही देखा था, किंतु आज समक्ष देख कर बड़ी प्रसन्ना हुई और स्वंय जाकर थोड़ी चाय पत्ती तोड़कर, इसका अनुभव करने का अवसर भी चुरा लिया। चेरापूंजी जिसका स्थानीय और आधिकारिक नाम 'सोहरा' है, पूर्वी खासी पहाड़ियों में स्थित एक बस्ती है। यह स्थान दुनियाभर में सर्वाधिक बारिश के लिए जाना जाता है। चेरापूंजी में प्रवेश करते ही इसने अपना अहसास करवा लिया। बादलों ने हमें चारों ओर से घेर लिया, मानो कह रहें हों स्वागत है तुम्हारा बादलों की नगरी में। चेरापूंजी में देखने लायक बहुत सी जगह हैं, जैसे वहाँ का प्रसिद्ध 'नोहकलिकाई वॉटरफॉल' जो भारत का सबसे ऊँचा झरना है जिसकी ऊँचाई 340 मीटर है। 'नोहकलिकाई' झरने के बाद हमने रूख किया चेरापूंजी में सबसे लोकप्रिय स्थान में से एक 'मौसमाई गुफा' का। यह पूर्वी खासी पहाड़ियों में गुफाओं की एक लुभावनी भूलभुलैया है। जब जगमगाती रोशनी चूना पत्थर से मिलती है, तो अनगिनत रंग और प्रकाश के पैटर्न का निर्माण होता है। यह गुफाएँ भूमिगत जीवन की एक झलक प्रदान करती है। गुफा देखने के बाद हमारी गाड़ी में ब्रेक लगे 'इको पार्क' पर जाकर, यह चेरापूंजी शहर से सात किमी की दूरी पर स्थित है। 'इको पार्क' राज्य सरकार द्वारा मेघालय के पठारों में बनाया गया है, यह स्थानीय लोगों के साथ-साथ पर्यटकों के लिए एक बड़ा आकर्षण है, यहाँ से बांग्लादेश के सिलहट जिले के मैदानों के दृश्यों का आनंद ले सकते हैं। मेघालय को यदि हम झरनों का प्रदेश कहें तो कोई

अतिशयोक्ति न होगी क्योंकि यहाँ झरनों की कोई कमी नहीं है, गुफा के बाद हम एक और प्रसिद्ध झरने की ओर चले पड़े, वह था 'नोहशंगथियांग फॉल' जो एक सात खंड़ों वाला झरना है। इसे 'सेवन सिस्टर्स वाटरफॉल' के नाम से भी जाना जाता है। 315 मीटर ऊँचा और तकरीबन 70 मीटर चौड़ा यह झरना भारत के ऊँचे झरनों में से एक है।

झरनों के बाद हमने रूख किया 'डबल डेकर रूट ब्रिज' की तरफ, यह वैसे तो यह एक साधारण सस्पेंशन ब्रिज है जो पेड़ को आकार देकर जीवित पौधों की जड़ों से बनता है किंतु इसकी मज़बूती किसी लोहे को ब्रिज को चुनौती देती प्रतीत होती है। इस पुल तक पहुँचना थोड़ा कठिन है। यहाँ जाने के लिए तकरीबन 3500-4000 सीढ़ियाँ चढ़नी और उतरनी पड़ती है, मार्ग भी थोड़ा दुर्गम है किंतु एडवेंचर के शौकीन लोगों के लिए यह अपनी क्षमताओं को जाँचने का एक मौका भी है। हमने इसे एक चुनौती की तरह लिया और 'डबल डैकर' के इस दुर्गम सफर को एक अच्छे अनुभव (पैरों में दर्द के साथ) के साथ पूरा किया। हाल ही में योनिस्को द्वारा इसको

विश्व धरोहर की श्रेणी में रखा गया है। चेरापूंजी को एक दिन में घूम पाना संभव नहीं है, एक स्थान से दूसरे स्थान पर यूं तो गाड़ी से दूरी तय की जाती है किंतु घूमने के तकरीबन सभी स्थलों में चलना खूब पड़ता है इसलिए हमने निर्णय लिया कि अगले दिन के लिए भी कुछ रख लिया जाए।

अगले दिन हम निकल पड़े एशिया के सबसे स्वच्छ गाँव को देखने जिसका नाम है 'मावलिनॉन्ग', चेरापूंजी से इसकी दूरी लगभग 22 किमी है। गाँव की साफ-सफाई देखते ही बनती है। कहीं पर भी किसी कूड़े का नामोनिशान नहीं था। सड़के विकसित व चमचमाती हुई थी। यहाँ-वहाँ स्त्रियाँ झाड़ू से सफाई करती देखी जा सकती थी। जगह-जगह बांस के कूड़ेदान लगे हुए हैं। हमें वहाँ के स्थानीय लोगों द्वारा बताया गया कि इन कूड़ेदानों से निकलने वाले जैविक कूड़ों का प्रयोग खाद बनाने में किया जाता है। इस स्वच्छ गाँव को आँखों में बसाए हम निकल पड़े एक और वाटर फाल 'डेन्थलेन वॉटरफाल' देखने। 'डेन्थलेन' नाम स्थानीय लोगों द्वारा झरने

के शीर्ष पर मारे गए 'अजगर' के नाम पर रखा गया है। वॉटरफाल देखने के उपरांत हमने स्थानीय मार्केट से खरीदारी की, उसके पश्चात विश्राम करने होटल के कमरों में चले गए। अगले दिन की यात्रा के लिए पर्याप्त आराम की आवश्यकता जो थी। अगले दिन हम निकल पड़े 'डॉकी' की तरफ, 'डॉकी' मेघालय में पश्चिम जयंतिया हिल्स जिले में स्थित एक पर्यटन स्थल है। यह भारत बांग्लादेश सीमा पर स्थित है। 'डॉकी' भारत और बांग्लादेश के बीच व्यापार का एक प्रमुख केंद्र है। यहाँ पर प्रसिद्ध नदी है जिसका नाम 'उमंगो'ट है, यह अपने आइने जैसे साफ पानी के लिए प्रसिद्ध है। नदी में हमने नाव की सवारी का लुफ्त उठाया और नदी पर बने खूबसूरत ब्रिज पर चहलकदमी की। भारत बांग्लादेश सीमा पर जाकर बीएसएफ जवानों के साथ बातचीत की और सीमा पर तस्वीरें खिंचवाई। भारत-बांग्लादेश सीमा का यह अनुभव भी कभी न भूलने की श्रैणी में आता है। रात हमने डॉकी में 'उमंगोट नदी' के किनारे ही कैम्पिंग करते हुए बिताई। कैम्पिंग का यह अनुभव बहुत यादगार रहा। सारी रात हुई बारिश ने अगली सुबह 'उमंगोट नदी' के जलस्तर को काफी बढ़ा दिया था क्योंकि रात को ही हमने देखा था नदी में पानी की मात्रा न के बराबर थी किंतु रात भर हुई बारिश ने सुबह का नज़ारा ही बदल दिया था। सुबह नाश्ता कर हम वापस निकल पड़े शिलांग शहर की ओर, रास्ते भर चेरापूंजी की खूबसूरती को आँखों में बसाए इस ट्रिप के लिए ईश्वर का धन्यवाद कर रहे थे। शिलांग पहुँचकर हमने स्थानीय बाज़ार में समय बिताया, हम सबने थोड़ी बहुत शापिंग की, स्थानीय भोजन का आनंद लिया और कुछ देर गप-शप मारने के बाद सो गए।

अगली सुबह हम गुवाहाटी के लिए निकल पड़े क्योंकि हमारी फ्लाइट वहीं से थी। सारे रास्ते हम मेघालय की खूबसूरती, स्वच्छा के प्रति वहाँ के लोगों की जागरूकता तथा पर्यावरण से उनके प्रेम का ही ज़िक्र करते रहे। दो घण्टे की फ्लाइट के बाद हम नई दिल्ली अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतर कर अपने-अपने गंतव्य की ओर चल पड़े, कभी न भूलने वाली अपनी उत्तर पूर्व राज्य (मेघालय) की योदों को दिल में लिए।

राजेश कुमार सिंह
स.ले.प.अ.

<u>तेरा भी सम्मान होगा</u>

भाई का सहारा, पिता का अभिमान होगा,
बहन का साहस, माँ का स्वाभिमान होगा !!
अथक निरंतर प्रयत्नों से हर मुश्किल काम आसान होगा,
कर मेहनत, एक दिन तेरा भी सम्मान होगा !!
हकीकत करने हैं वो ख्वाब आँखों में जो सजाए हैं,
जिसे पाने की चाहत में न जाने कितने लम्हें बिताए हैं !!
बहुत हुआ अपमान, हासिल अब मुकाम होगा,
कर मेहनत, एक दिन तेरा भी सम्मान होगा !!
रख हौसला वो मंजर भी आएगा,
जग सारा तेरे पीछे-पीछे आएगा !!
अपने श्रेष्ठ कर्मों से तू पुरुष महान होगा,
कर मेहनत, एक दिन तेरा भी सम्मान होगा !!
वो दिन आएगा जब तू देश की शान होगा,
दुनिया में तेरा एक अलग ही मुकाम होगा !!
आलोचकों में भी तब तेरा गुणगान होगा,
कर मेहनत, एक दिन तेरा भी सम्मान होगा !!
सफलता के शिखर पर जब तू विराजमान होगा,
तेरी ज़मीं, तेरा ही आसमान होगा !!
तेरे ही क़दमों में ये, सारा जहाँ होगा,
कर मेहनत, एक दिन तेरा भी सम्मान होगा !!

आशीष कुमार
स.ले.प.अ.

नब्बे का दौर

नब्बे का दौर जिसे आपने जिया है या दूसरों को जीते हुए देखा है। इस दौर से गुजरने वाले लोगों की क्या शानदार दुनिया थी यानी टीवी एंटीना को आड़ा-टेढ़ा घुमाकर 'आया क्या'? वाले सवालों का दौर, महाभारत, चंद्रकांता, अलिफ़ लैला और शक्तिमान जैसे धारावाहिकों वाले रोमांच का सफर, 'किसमी बार' और 'फाइव स्टार' की मिठास का दौर, 'बुमर' और 'बिग बबूल' चबाकर गुब्बारे फुलाने का दौर, चाचा चौधरी वाली 'कॉमिक्स' का दीवानापन, विविध भारती में प्रसारित सदाबहार नगमों का दौर।

वह वो वक्त था जब स्कूल बैग तैयार करना, किताबों के रैक को अच्छे से सजाना, जूते चमकाना, रात की पढ़ाई के लिए लैंप/लालटेन के शीशे को साफ करना यह सब एक मिशन जैसा लगता था। हर साल जब नई कक्षा के बस्ते बंधते तब कॉपी-किताबों पर जिल्द चढ़ाना हमारे जीवन का वार्षिक उत्सव था।

सच्चा वाला प्यार क्या होता है, यह नब्बे के दौर से सीखना चाहिए क्योंकि उस समय हर राहुल जिसका कोई नाम 'सुना हो या ना सुना हो' उसे 'कुछ-कुछ होता ज़रूर' था। हर सिमरन अपनी ज़िन्दगी जीने के सपने देखती थी। मोबाइल फोन का तो ज़माना था नहीं इसलिए अपने दिलबर की एक झलक पाने के लिए घण्टों उसके गुज़रने वाले रास्ते पर इंतजार होता था और बिना काम के ही महबूब की गली में कई चक्कर भी लग जाते थे।

नब्बे के दशक को जीने वालों का चाँद से भी एक विशेष लगाव था क्योंकि उस समय की फिल्मों में चाँद का किरदार ऐसा होता था कि लोग उससे काफी जुड़ा हुआ महसूस करते थे। महबूब के लिए प्रेम पत्र में शायरी लिखनी हो या महबूब की तारीफ करनी हो, बिना चाँद

के अधूरा ही रहता था। वैसे अजीब बात है न, बचपन में जिस चाँद को मामा कहते हैं, जवानी में उसी चाँद को महबूब मानकर शायरियाँ गढ़ते हैं और बुढ़ापे में सौरमंडल का सिर्फ एक खगोलीय पिंड बोलकर पल्ला झाड़ लेते हैं। जिस चाँद को देखकर बचपन में नींद आती थी, जवानी में उसी को देखकर नींद उड़ जाती है। वो खुराफात जिसमें 'अपनी वाली' को बोलना कि "आज रात ठीक 8 बजे तुम चाँद को देखना और मैं भी देखूंगा" और इस तरह दोनों एक दूसरे को देखेंगे। कसम से आज किसी लड़की को ये बात बोल दो तो वो सोचेगी कि कैसा अजीब गंवार आदमी है और कैसी फालतू बातें करता है; वो ज़माने जब प्यार में रोमांस और मैजिक चला करता था, आजकल तो सिर्फ लॉजिक चलता है।

उस दौर में सब कुछ गीत-ग़ज़ल की तरह लगता था। घर की साइकिल को चुपके से निकालकर चलाते नहीं उड़ाया करते थे, कमीज़ को पानी छिड़क कर दो-दो बार प्रेस करके पहनते थे। पापा के डर से सवेरे-सवेरे जाग कर पढ़ाई करते थे क्योंकि ऐसा कहा जाता था कि सुबह की पढ़ाई में चीज़ें जल्दी याद होती है (ये अलग बात थी कि सुबह के समय पढ़ाई से ज़्यादा नींद से लड़ाई में ही समय व्यतीत होता था)। हर शुक्रवार को रात में दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले सिनेमा को देखने के लिए जागना, रविवार की सुबह 'रंगोली' देखने के लिए पूरे हफ्ते बेसब्री से इंतज़ार करना, गली-मुहल्लों में क्रिकेट खेलते समय सचिन तेंदुलकर एवं अन्य क्रिकेटरों के स्टाइल को कॉपी करना। रविवार मतलब अखबार के साथ रंगीन वाला पेपर, जिसमें फिल्मों की खबरें होती थीं और बाद में वही किताबों में जिल्द लगाने के काम आती थी। अगर ज़िन्दगी को रिवर्स करके देखें तो असली एडवेंचर तो हमारी जिंदगी में था। आजकल पैराग्लाइडिंग, रिवर राफ्टिंग आदि एडवेंचर के लिए किया जाता है पर नब्बे के दौर में गली के कुतों को लड़वाना और उसे ललकारते हुए तेजी से साइकिल निकालना, अधूरी मोहब्बत की शादी में जाकर भरपेट दावत उड़ाना, पब्लिक ट्रांसपोर्ट पर 'स्टाफ हैं हम' बोलकर रौब जमाना, बिना टिकट ट्रेन में टीटी के साथ लुक्का-छिप्पी खेलना और घण्टों ट्रेन के शौचालय में सांस रोककर खड़े रहना,

ट्रैक्टर के पीछे लटकना, ये सब एडवेंचर से कम था क्या ? आजकल भले ही दुनिया बहुत आगे निकल गई हो, तकनीक हर जगह हावी हो गई हो लेकिन नब्बे के दौर की ज़िन्दगी में सुकून, अपनापन, संघर्ष इतना हसीन था कि अगर आज भी पुरानी बातों को याद करें तो चेहरे पर एक सुकून भरी मुस्कुराहट आ ही जाती है। **नोट- आलेख को रोचक बनाने के लिए आधुनिक हिंदी का प्रयोग किया गया है।**

अमित कुमार,
लेखापरीक्षक

<u>शाकाहारी बनें</u>

मेरे प्यारे इंसानों,

आपके पास भावनाएं हैं, हमारी भी भावनाएं हैं

आप दर्द महसूस करते हैं, हम भी दर्द महसूस करते हैं

आप डरपोक हैं, हम भी डरपोक हैं

आपका एक परिवार है, हमारा भी एक परिवार है

आप जीना चाहते हैं, हम भी जीना चाहते हैं

आप जीवित प्राणी हैं, हम भी जीवित प्राणी हैं

आप भगवान द्वारा बनाए गए हैं , हम भी उसी भगवान द्वारा बनाए गए हैं

आपके पास विवेक है, हमारे पास भी विवेक है

आपके पास एक आत्मा है, हमारे पास भी एक आत्मा है

आप अपना गला काटना पसंद नहीं करेंगे, हम भी नहीं करेंगे

आप हमारे लिए भोजन नहीं हैं, हम भी आपके लिए भोजन नहीं हैं

आपका विश्वासी,

हस्ताक्षरित: आपके सबसे विनम्र मित्र (गाय, मुर्गियां, बकरियां और अन्य)

मेघा कौशिक
व.ले.प.अ.

वर्तमान में जीना

आम तौर पर आध्यात्म और धर्म को एक ही माना जाता है। परन्तु धर्म एक मानवीय समाज की उपज है और आध्यात्म आंतरिक यात्रा का परिणाम। ज़रूरी नहीं कि एक धर्म को मानने वाला व्यक्ति अध्यात्मिक भी हो और इसका उलटा भी सर्वथा सत्य नहीं होता। मनुष्य का जन्म सामान्यतः एक परिवार में होता है जो किसी धर्म में आस्था रखते हैं परन्तु एक विचार करने वाला व्यक्ति समय के साथ अपने धर्म की अच्छाइयों व बुराइयों पर विचार करता है और उसमें से अपने लिए वांछनीय तत्वों को ग्रहण कर वर्जित तत्वों को नकार देता है।

समाज की वर्जनाएँ, नियम तथा कानून, अधिकतर न्याय और वस्तुनिष्ठता पर आधारित होते हैं। सभी प्रेरणादायक वक्ता इस बात पर ज़ोर देते हैं कि हमें वर्तमान में जीना चाहिए। वर्तमान की परिभाषा बहुत कठिन है क्योंकि विचार करते ही वह पल भूतकाल बन जाता है और चिंता करने से भविष्यकाल। वर्तमान में न जीने से व्यक्ति या तो भूतकाल की कुंठा से ग्रस्त रहता है या भावी पीढ़ियों के लिए भविष्य की चिंता उसे जीने नहीं देती।

रूढ़ीवादी सोच हमें अपने से बड़े व्यक्तियों को विश्लेषण करने का मौका नहीं देती, जब तक कि वह सार्वजनिक जीवन में बड़ा व्यक्ति न हो जैसे राजनीतिज्ञ, कलाकार आदि। वर्तमान में यदि कोई व्यक्ति हमसे गलत या अनुचित व्यवहार करता है, तो भी सामाजिक वर्जनाएँ तथा लोगों से समर्थन अपेक्षित न होने की स्थिति में व्यक्ति भूतकाल में ही निर्णय लेता है। हमें परिवार में भी गलत व्यवहार को नकारना चाहिए।

वर्तमान में जीने के लिए गौतम बुद्ध जैसी निडरता की आवश्यकता है, जिन्होंने अपने राज्य और परिवार को त्यागकर एक अनजानी दुनिया में कदम रखा और अंततः अपने वर्तमान को अपनाकर अपने भूतकाल (राज्य और परिवार) को छोड़कर एक नए विचार और धर्म का उद्भव किया। 1970 में निर्मला देवी जोकि एक उच्च पदस्थ आईएएस अधिकारी की पत्नी थीं, ने नारगोल (गुजरात) में सहस्त्रार चक्र का उच्छेदन कर सामूहिक कुण्डलिनी जागरण का

आविर्भाव किया। इस घटना का हज़ारों साल पहले लिखे गए ग्रन्थ ज्ञानेश्वरी में उल्लेख मिलता है। श्रीमती निर्मला देवी ने सहज योग नामक धर्म का उद्‌भव किया जो आज 173 देशों में फ़ैला हुआ है। रूस के नेता गोर्बेच्योव से लेकर भारत के नामचीन उद्‌यमी आनंद महिन्द्रा तक ने सहज योग में 'आत्मसाक्षात्कार' प्राप्त किया है।

सहज योग में वर्तमान में जीने ओर निर्विचार रहने पर ज़ोर दिया गया है। दीपक चोपड़ा जैसे महान डॉक्टर ने भी ऐलोपैथ की शिक्षा का त्याग कर 'क्वान्टम जोन' का ज़िक्र किया है जहाँ सारी बीमारियाँ और उलझनें समाप्त हो जाती हैं। निर्विचार होकर हम इस क्वान्टम जोन को छू पाते हैं। हमें अपनी सभी समस्याओं और अपने सर्वस्व को निर्विचारिता में समर्पित कर देना चाहिए, जहाँ से परम तत्व हमारी समस्याओं का पूर्ण निराकरण कर हमें असीम शान्ति प्रदान करते हैं।

डॉ. अनुराधा जोशी
कनिष्ठ अनुवादक

कर्ण कृष्ण संवाद

हे केशव! तुम तो ज्ञाता थे
इसके कि मैं राधेय नहीं
आप स्वयं नारायण हो
क्यों रोका फिर यह कार्य नहीं
क्यों हुआ रहस्य यह उद्घाटित
मुझको होता ये पश्चाताप
सारे मेरे अपने ही हैं
अब रण में होगा रक्तपात
बाण तुणीर से निकलेंगे
मानस रोकेगा मत कर घात
पांचों ही मेरे अनुज प्रिय
फिर कैसे छोड़ेंगे शर-चाप
अपने अनुजों का हंता है
ये कहेगा पूरा आर्यवर्त
फिर कैसे पाप धुलेगा ये
विचार ले जाता भविष्य गर्त
अनुज वधु को ना मान दिया
पांचाली का अपमान किया
जाने कब माया मेघ घिरे
घनघोर मेरे इस मानस पर

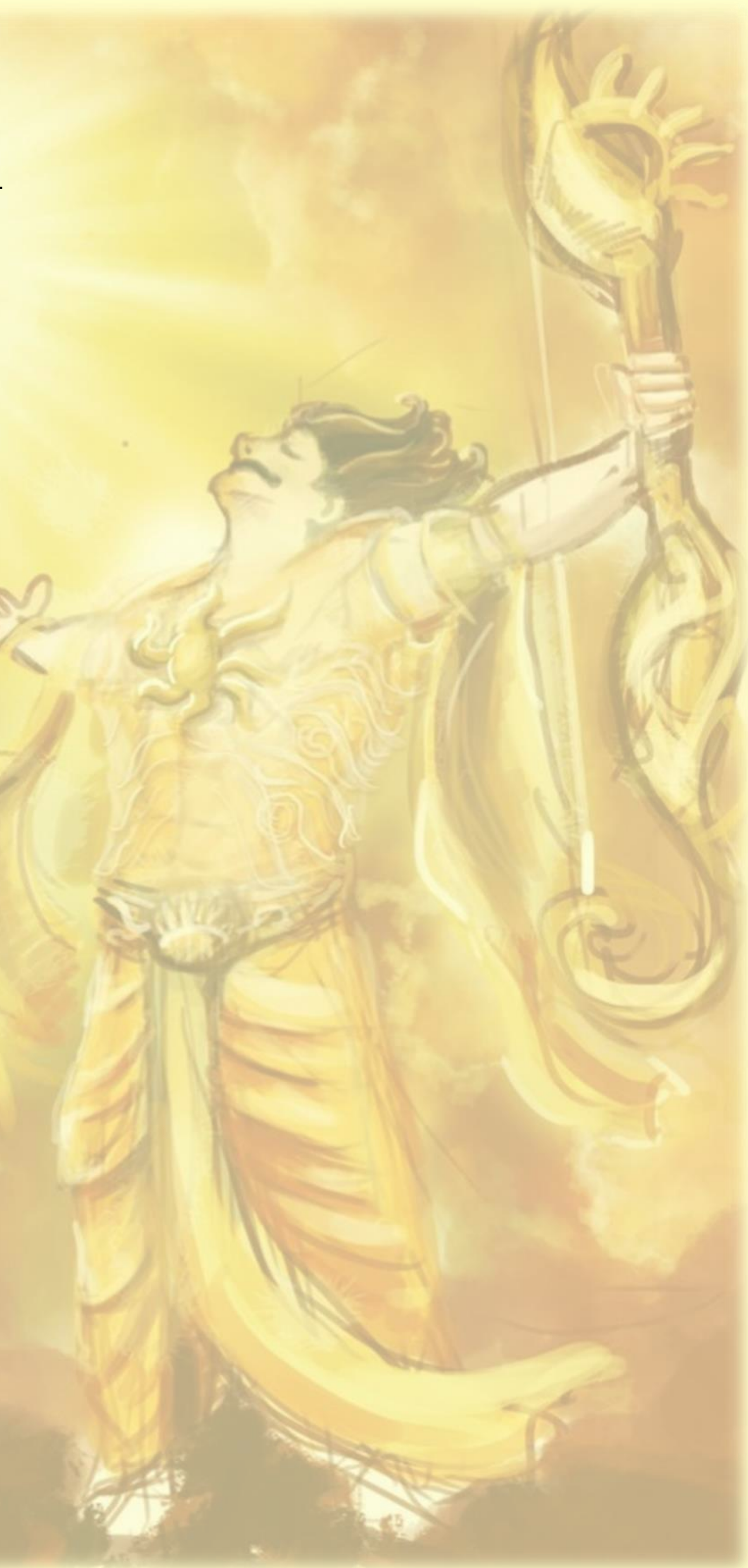

प्रतिस्पर्धा में धर्म-अधर्म का
क्यूँ ना मैं कर पाया अंतर
क्यों क्षमा करे मुझे पांचाली
जिह्वा ने किया कुपित आघात
आज खड़ा नारायण समक्ष
अब करता है मन पश्चाताप
जलता हूँ मैं ग्लानि से अब
इस अग्नि से कैसे निकलूँ
इस पापी मुख से नारायण
अब श्वासों को कैसे निगलूँ
हे केशव! तुम सब ज्ञाता हो
तुम सबके भाग्य विधाता हो
शरण तुम्हारी हूँ मुक्ति दो
हे ईश्वर! कुछ ऐसी युक्ति दो
अब लज्जित हूँ और कुंठित हूँ
पापाग्नी से आतंकित हूँ
उद्‌विग्न हो रहा मन मेरा
हे माधव! मार्ग दिखाओ तुम
करबद्‌ध निवेदन करता हूँ
दुविधा के मेघ छंटाओं तुम
पांडव भी मेरे भ्राता हैं
दुर्योधन मेरा मित्र अभिन्न
किसको चाहूँ, किसको छोड़ूँ
अंतर्मन होता है विछिन्न
बोले श्री कृष्ण सुनो सूर्य पुत्र
तुम बैठे मन में विषाद भरे
अपराध किया, तुमने माना
यह तो महापुरुषों का गुण है
तुम शरण मेरी, मैं रख लूँगा
मेरा तुमको आमंत्रण है

होता अधर्म का नाश सदा
है धर्म मात्र जो शाश्वत है
छोड़ो अधर्म और धर्म चुनो
रण- भू में तुम्हारा स्वागत है
दुर्योधन को त्यागो कौन्तेय
पांडव संग रण में आओ तुम
सब पाप क्षमा हो जाएंगे
बस अपना चरण बढ़ाओ तुम
हे कष्टहरण! हे मधुसूदन!
नमन कोटि, नतमस्तक हूँ
हे नारायण! हे केशव मैं
दुर्योधन का शुभचिंतक हूँ
जो त्याग दिया दुर्योधन को
मैं मित्र दोषी बन जाऊँगा
विश्वास मित्र का हो अखंड
मैं कदापि नहीं सह पाऊँगा
भरी सभा में वीरों ने जब
सूत पुत्र था नाम दिया
दुर्योधन मित्र बना मेरा
और वीरों जैसा मान दिया
अंगदेश दे दिया मुझे
और अंगराज फिर नाम दिया
उसकी मित्रता के ऋण से मैं
उऋण नहीं हो पाऊँगा
क्षमा करें हे वासुदेव!
मैं ऐसा ना कर पाऊँगा
माना कि हार सुनिश्चित है
मेरा मरना भी निश्चित है
जहाँ आप खड़े हों हे माधव!
विजय वहीं पर स्थित है
चुने यदि मैंने पांडव

तो कायर मैं कहलाऊँगा
मेरी विनती हे हरि! सुनो
मैं ऐसा ना कर पाऊँगा
पर अनुजों को ना पता चले
कि ज्येष्ठ मैं उनका भ्राता हूँ
रख लेना लाज हे कृष्ण! मेरी
मैं तुमको शीश नवाता हूँ
पता चला यदि अनुज युधिष्ठिर
स्वीकार करेगा नहीं कभी
क्यों लूँ हस्तिनापुर सिंहासन
जब ज्येष्ठ भ्रातृ श्री कर्ण अभी
किन्तु मैं न ऐसा चाहूँगा
है राजा बनने योग्य वही
धर्मात्मा है वह ज्ञानी है
है राजकर्म के योग्य वही
यदि मुकुट रख दिया मेरे सिर
मित्रता की मर्यादा रखूँगा
अपने सिर का मैं मुकुट वही
दुर्योधन मस्तक रख दूँगा....
दुर्योधन मस्तक रख दूँगा....

मनोज मधुकर कस्तूर
व.ले.प.अ.

एक और परिवार

ऑडिट विभाग मे मेरा सफर जो सितम्बर 2008 से शुरू हुआ था जो आने वाले कुछ दिनों में पूरे 14 वर्ष का हो जाएगा। जो मुम्बई, दिल्ली, ग्वालियर और वर्तमान में फिर दिल्ली से जारी है। मुझे अपने सफर का लगभग डेढ़ साल मुम्बई में एक साधारण से मराठी परिवार के साथ जीने का मौका भी मिला था। उस दौरान परिवार ने मुझे, कुछ इस तरह अपनाया था की मैं एक वक्त पर खुद को भी मराठी मानुस समझने लगा था। मेरे उस परिवार में मुझे न सिर्फ सविता और रोहन जैसे भाई-बहन मिले बल्कि माँ जैसी आंटी जी का भरपूर प्यार भी मिला। अपने उसी दूसरे परिवार के प्रति अपना आभार मैने स्वयं लिखित पंक्तियों के रुप में व्यक्त करने का प्रयास इस आशा से किया है की यह आप सबको भी पसंद आएँगी:-

हर सफ़र की शुरुआत नयी होती है,
रास्ते बदल सकते हैं पर मंजिल तय होती है,
हर सफ़र अकेले ही तय करना होता है,
नए रिश्ते बनते हैं एहसास भी नया होता है,
कुछ दिन पहले तक जो अजनबी होता है,
चंद मुलाकातों मे वो प्यारा सा लगने लगता है,

न थी जान पहचान, न हुई कभी मुलाकात,
पर अब लगे इनके बिना अधूरी हर बात,
कहीं दिक्क़त होती है, तो कहीं ख़ुशी भी,

कुछ उन्हें महसूस होता है और कुछ मुझे भी,
गैरों में मिला यह एहसास बहुत खास होता है,
घर से दूर एक दूसरा परिवार सदा पास होता है,
वहाँ कोई 'आई' तो कोई 'दीदी' कहलाती है,
प्यार इतना मिलता है कि ज़िंदगी संवर जाती है,
मानो तकलीफ एक को हो तो दर्द सबको होता है,
गैरों में मिले अपने से परिवार में भी ऐसा होता हैं,
लम्हें गुज़र गए पर वो बातें आज भी बहुत याद आती है,
जब पीछे मुड़कर देखो तो कल की सी बात नज़र आती है,
फैमिली से दूर एक और फैमिली बन चुकी थी,
ज़िंदगी वही थी पर मेरी तकदीर बदल चुकी थी,
मेरे इस दूसरे परिवार में सदा मुस्कान खिली रहे,
हर गुज़रते पल में खुशियाँ और बढ़ती रहें,
नहीं जानता यह सफ़र मुझे कहाँ ले जायेगा?
पर साथ गुज़रा हर लम्हा ज़रुर याद आयेगा।।

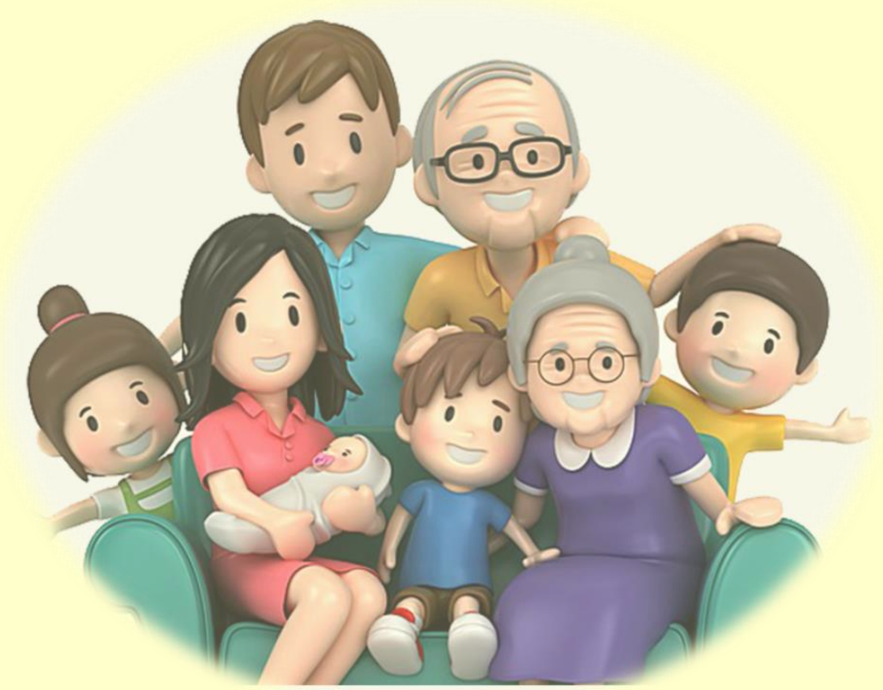

विनोद कुमार शर्मा
व.ले.प.

वो चौदह दिन

दुख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुख काहे को होय।।

संत कबीर जी की यह वाणी आज मनुष्य को अपना जीवन जीने की प्रेरणा देती है। मनुष्य अपने जीवन का हर पल हँसी-खुशी, अपनों के साथ रह कर बिताना चाहता है। उसका यह व्यवहार ही उसे दीर्घायु होने की प्रेरणा देता है। इसी स्वभाव के कारण उसे अपना लंबा जीवन काल भी कम लगने लगता है। परंतु दुखों में उसको अपनों की, उनके प्यार, दुलार तथा देखभाल की अधिक आवश्यकता होती है, जिससे कि वह उन दुखों पर तीव्रता से विजय प्राप्त कर स्वस्थ हो जाता है। किसी भी जीव के लिए कुछ दिनों का एकाकी जीवन व्यतीत करना उसे कई बरस के समान लगता है। कोई कभी नहीं चाहेगा कि ऐसे पल उसकी ज़िंदगी में लौट कर दोबारा आए।

बात उन दिनों की है जब (वर्ष 2020 के मई माह की) हमारे कार्यालय की रिपोर्ट का हिदीं में टंकण संबंधी कार्य चल रहा था। शाम के तकरीबन पांच बज रहे थे कि निदेशक महोदय ने हमें टंकण कार्य हेतु शनिवार एवं रविवार को कार्यालय आने को कहा। हमने भी निदेशक महोदय के निर्देश को अधमने मन से स्वीकार कर लिया। इस उधेड़बुन में हम आपस में बात कर रहे थे कि मेरे मोबाइल की घंटी बजी। “हैलो! हम आरोग्य सेतु ऐप से बोल रहे हैं।” आरोग्य सेतु ऐप से फोन कॉल को रिसीव करने पर मुझे कोरोना पॉजीटिव व्यक्ति के संपर्क में आने की सूचना दे दी गई। मुझे क्वारंटीन में रहने को कह दिया गया। मैं निःशब्द हो चुका था, शरीर कार्यालय में था पर मस्तिष्क क्वारंटीन सेंटर पहुँच चुका था। कानों में एंबूलेंस के सायरन की आवाज़ें सुनाई दे रहीं थीं। उसकी बात सुन कर पैरों के नीचे की ज़मीन खिसक चुकी थी। मैंने अपने सहकर्मियों से सांत्वना एवं धैर्य बंधाने की आस में, फोन पर मिला संदेश सुना दिया। यह खबर सुनते ही, मेरे अपने सहकर्मी मुझसे दूर भागने लगे। जो सहकर्मी

अभी मेरे साथ बैठ कर कल की तैयारी कर रहे थे, वो भी दूर खड़े मुझे घूर रहे थे। यह खबर जंगल की आग की तरह फैल रही थी। बात कुछ भी नहीं थी, पर बहुत कुछ थी। मेरा आरोग्य सेतु ऐप हरे रंग से लाल हो चुका था। निदेशक महोदय ने सरकारी कार्यालय की कार्यशैली के विपरीत, तत्परता से कार्य करते हुए मुझे चौदह दिन क्वारंटीन रहने का फरमान जारी कर दिया। भय मनुष्य को अदंर से तोड़ देता है। मैं निराश, बेसहारा, असहाय था और जब मैंने यह खबर अपनी गृहलक्ष्मी को दी तो उनका भी सर चकरा गया। मेरी इस गोपनीय खबर को किसी को न बताने के निवेदन के बावजूद उन्होनें इस गोपनीय रखने वाली खबर पर पेट्रोल डाल दिया। उन्होंने पड़ोसियों, ससुराल तथा मायके, सब जगह यह बात बता दी, किंतु वहीं दूसरी ओर मेरी अर्धांगिनी होने की ज़िम्मेदारी निभाते हुए मेरे स्वास्थ की चिंता में गिलोय, कालीमिर्च, तेजपत्ता, गुड़, तुलसी, दालचीनी आदि इक्ट्ठा कर उसका काढ़ा भी तैयार कर लिया गया। मेरा कार्यालय से लौटने का बेसब्री से इंतजार हो रहा था। बाहर एक बाल्टी पानी, साबुन, सैनीटाईज़र कपड़े आदि मेरा स्वागत कर रहे थे। अड़ोस-पड़ोस की औरतें, आदमी, बच्चें हमें घूर कर देख रहे थे। घर के आँगन को स्नानगृह बनाने के पश्चात मुझे क्वारंटीन कर दिया गया। मेरा घरेलू जड़ी-बूटियों से इलाज शुरू हुआ; जिनका काढ़ा मुझे चार समय दिया जा रहा था; जिससे मेरे मुँह में छाले हो गए। परिस्थितियाँ ऐसी थीं कि हम दूसरी बीमारी की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। टी.वी. पर कोरोना समाचार सुनकर मेरा दिल बैठा जा रहा था। क्वारंटीन का समय काटना यूं तो मुश्किल हो रहा था किंतु फोन पर शुभचिंतकों की बाढ़-से मेरा कुछ समय व्यतीत हो ही जाता था। जितने लोग, उतनी बातें, उतनी दवाएँ। बहरहाल कुछ खोए हुए जीवन-व्यापन के बोझ तले, कुछ भूले बिछड़े रिश्ते-नातों ने फिर से कंधे से कंधा मिला लिया। अंततः जैसे-तैसे इंतजार खत्म हुआ और वह शुभ दिन भी आ ही गया जब मुझे पुनः आरोग्य सेतु ऐप से एक फोन आया। पत्नी जी के आदेश पर मैंने मोबाइल का स्पीकर चालू कर दिया। संदेश से हम सभी ने राहत की साँस ली। परिवारजनों में खुशियों की लहर सी दौड़ गई। मुझे अंततः कोराना नैगेटिव बता दिया गया। मेरा आरोग्य सेतु ऐप लाल रंग से हरा सुशोभित हो रहा था, जिससे मुझे गर्व की अनुभूति हो रही थी। शीघ्र ही सभी रिश्तेदारों की बधाइयाँ मिलना आरंभ हो गईं। सारे परिवार ने चौदह दिन के बाद मिलकर साथ बैठकर खाना खाया, जिससे शरीर में नई चेतना जागृत हो गई। हमने मन ही मन ईश्वर को प्रणाम किया और प्रार्थना की, कि इस कोरोना नामक बीमारी को विश्व से सदा के लिए खत्म कर दें जिससे कि विश्व के सभी प्राणी प्रेम से, खुशी से, निडरता और शांति से अपनों के साथ रहकर जीवन व्यतीत कर सकें। अब भी उन चौदह दिनों को याद कर मन सिहर उठता है।

संध्या मिश्रा
स.ले.प.अ

<u>ज़िंदगी की उत्कंठा</u>

ढ़लती चली गई ज़िंदगी, साँचों के आकार में,

कोई साँचा बड़ा था, कोई छोटा
किसी साँचे में तो कई आकार थे
पर हाँ! ढलती चली गई ज़िंदगी, साँचों के आकार में।

जिस परिवेश में पली ज़िंदगी, वह साँचा बहुत नरम था।
आगे पता चला कि वह साँचा ही ज़िंदगी की कलम था।
ना-ना प्रकार के आकार दिए, जन ने......
जिसमें अपने आकार को ही भूल गई ये ज़िदंगी
पर हाँ! ढलती चली गई ज़िदंगी साँचों के आकार में।

कई बाधाएं, व्यथन आए मार्ग में,
इन व्यथाओं की तरफ मुड़ती चली गई ज़िदंगी।
ज़िंदगी के एक विपरीत पल में मिले मूर्तिकार मुझे ....
बोले इस साँचे में ढ़ालो या ढ़ल जाओ।

पर कोई साँचा बड़ा था, कोई छोटा, बस ढ़लती चली गई ज़िंदगी
बस इस चेतना की एक उत्कंठा है कि ......
मिले सही मूर्तिकार इसे, ताकि एक क्या सौ साँचे सब लगे बेकार इसे।
पर हाँ ! ढ़लती चली गई ज़िंदगी साँचों के आकार में।

मेघा कौशिक
व.ले.प.अ.

हुई है वही जो राम रचि राखा

भारतीय मानस के पटल पर गोस्वामी तुलसी दास की रामचरित मानस का प्रभाव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दिखाई देता है। धार्मिक व्यक्ति के कृत्यों पर उसकी सोच हावी होती है। रामचरितमानस की यह पंक्ति "हुई है वही जो राम रचि राखा, को करि तरक बढ़ावै साखा", ऐसा प्रतीत होता है कि अंततः व्यक्ति नियति के अधीन है। परन्तु मानस में एक और जगह कहा गया है, "कर्म प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस करि तो तस फल चाखा"। यह दोनों कथन विरोधाभास को जन्म देते हैं, परन्तु असल में दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। व्यक्ति जिस प्रकार के कर्म करता है- अच्छे या बुरे, उसी के अनुरूप उसका भाग्य निर्माण होता है। नियति पूर्व निर्धारित तथ्य कदापि नहीं है, यह पूर्णतः हमारे कर्मों से निर्मित होती है।

इसमें भी बहुत आयाम परस्पर अपना किरदार निभाते हैं। यम, नियम, आसन, ध्यान, प्राणायाम, धारणा, प्रत्याहार, समाधि ऐसे आठ अंग हैं, जिन्हें योग गुरु पतंजली ने अपने कालजयी ग्रन्थ 'योगसूत्र' में तीसरी शताब्दी में लिखा था। यही आठ अंग एक मनुष्य को अपना जीवन कैसे जीना है, बताते हैं। यम व्यवहार के सिद्धांत - जैसे अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी न करना), ब्रहमचर्य और अपरिग्रह (चीज़ें इकट्ठी न करना) पर ज़ोर देता है। शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान नियम की श्रेणी में आते हैं। आसन वह अवस्था है जिसमें कोई व्यक्ति स्थिर और सहज हो जाए। प्राणायाम में प्राणों या साँसों पर नियंत्रण करने को कहा जाता है। इन सब अंगों को करने से इन्द्रियों पर संयम (प्रत्याहार), धारणा, ध्यान और ईश्वर के साथ योग (समाधि) हो जाता है।

गीता में भी इसी सिद्धांत को प्रतिपादित किया है। आम तौर पर लोग सोचते हैं कि श्री कृष्ण द्वारा बताए गए कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग तीन अलग-अलग मार्ग हैं, जो व्यक्ति का जीवन सफल कर सकते हैं अर्थात उसका भगवान से योग करा सकते हैं। परन्तु कोई भी व्यक्ति

ज्ञान के बिना और भक्ति से विमुख होकर केवल कर्म करने से एक रावण या हिटलर में आसानी से परिणत हो सकता है। इसलिए ज्ञान को पाने और कर्म को करने में कभी भी आलस नहीं करना चाहिए, परन्तु यह ज्ञान भी ईश्वर की प्रकृति और रचना को संवारने में प्रयोग होना चाहिए नहीं तो प्रकृति का अपने स्वार्थ के लिए अंधाधुंध दोहन ग्लोबल वार्मिंग और अवांछनीय युद्धों को जन्म देगा। विश्व को कुछ समय बाद उन्हीं नैतिक मूल्यों को अपनाना पड़ेगा जिससे हमारी भावी पीढ़ियाँ शान्ति, सोहार्द्र, सम्पन्नता एवं प्रकृति तथा मनुष्यों के साथ सद्भाव से रह पाएं।

राजेश रंजन
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

गज़लों का संकलन

गज़ल-1

सब गूँगें बहरे हो गए
ईमानदारी पे इतने पहरे हो गए।

सच की कौन सुनता यहाँ
झूठ कितने सुनहरे हो गए।

खैरात बँट रही थी जहाँ
सब लाईन में खड़े हो गए।

जिनको तालीम सिखायी दुनिया की मैंने
वो लोग आज हमसे बड़े हो गए।

दिल में कुछ, जुबां पे कुछ
हर चरित्र आज दोहरे हो गए।

गज़ल-2

निवाले जो लोग चुनते हैं कूड़े-कचड़ों से
उतने हम रोज फेंक देते हैं अपने घरों से।

घुटन, अकेलापन जहाँ मिलता है विरासत में
जी क्यों ना भरे फिर इन बड़े शहरों से।

सज़ा से डर नहीं लगता मुझे ऐ खुदा, मगर
हर बार बरी हो जाता हूँ, बाइज्जत कठघरों से।

चमकते हैं, सितारें जो आसमां में रोज़-रोज़
ये निकलते नहीं दिन में सूरज के डर से।

चोर-उचक्के मिलते रहते हैं बड़े शहरों में
सुनसान रातों में कभी निकलो ना घर से।

गज़ल -3

नफरतों का दौर जारी रखना
ये करम मुझपे बारी-बारी रखना।

कोई सुख, चैन ना मिले हमको
ऐसी अपनी ज़िम्मेदारी रखना।

बाण शब्दों के जब खत्म हो जाएं
फिर हाथों में तेज़ कटारी रखना।

ग़र मिला न सको कभी आँख मुझसे
तो आँखों में इतनी लाचारी रखना।

किसी का दिल जीतना है आसान बहुत
बस बातें उससे प्यारी-प्यारी रखना।

गजल-4

कभी धूप में, कभी छांव में
गम मिलते रहे अभाव में।

बहुत दूर तक चला शायद
कारवाँ मिलेगा किसी पड़ाव में।

मुसीबतों की रेस जीत तो ली
मगर छाले पड़ गए पाँव में।

किसी के दर्द का हमदर्द बन जाओ
क्या मिलेगा दिलों के अलगाव में?

तेरे इरादों को पढ़ सके हर कोई
ऐसी अदा रखना अपने बर्ताव में।

मनोज मधुकर कस्तूर
व.ले.प.अ.

ज़रूरत उस बदलाव की

21वी शताब्दी के इस आधुनिक भारत ने वर्तमान में विश्व और समाज के हर स्तर पर काफी उपलब्धियां हासिल की हैं। जिनमे कई भारतीय मूल के लोगों का विश्व की नामी कंपनियों में उच्च स्तरीय पद पर चयन होना, कॉमनवेल्थ तथा ओलंपिक्स में हमारे खिलाडियों द्वारा शानदार प्रदर्शन करना, शेयर बाज़ार का नई बुलंदियों को छूना, सोशल मीडिया का सामाजिक बुराइयों को उजागर करने हेतु उम्दा इस्तेमाल इत्यादि, शामिल है और न जाने भारतीय उपलब्धियों की यह सूची कितनी लम्बी होगी? परन्तु आज भी हमारे समाज में कई चुनौतियों को अपने विशेष समाधान का इंतज़ार हैं। उन्हीं चुनौतियों में से एक विषय है - दिव्यांग लोगों का समाज में अन्य लोगों द्वारा समान रूप से हर स्तर पर पूर्णतः स्वीकरण। जो भारतीय सरकारों द्वारा समय-समय पर उठाये गए ठोस उपायों के बाद भी हमारे बीच आज भी सर उठाये खड़ी है। इसी सन्दर्भ मे, मेरा यह लेख हमारे बीच रहने वाले सभी दिव्यांग जनों की सामाजिक दशा की तरफ आप सभी का ध्यान आकर्षित करने की छोटी सी कोशिश, मेरे शीर्षक "ज़रूरत उस बदलाव की......." में किया है:-

हम सबने 'दिव्यांग' या 'विकलांग' शब्द सुना होगा। पर क्या इस शब्द से जुड़े मायने हम सभी जानते हैं? तो शायद जवाब 'न' ही होगा क्योंकि दिव्यांग व्यक्ति आदि में कई तरह की अक्षमताएँ हो सकती हैं जैसे चलने में, देखने में, सुनने में अक्षमता इत्यादि। अन्य शब्दों में वे लोग जिनके पास दीर्घकालिक शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक या संवेदी विकार होते हैं जो समाज में विभिन्न बाधाओं के साथ बातचीत में दूसरों के साथ समान आधार पर उनकी पूर्ण और प्रभावी भागीदारी में बाधा डालते हैं। विकलांगता आम तौर पर दो प्रकार की होती है,

एक जब कोई व्यक्ति विकलांगता के साथ पैदा होता है जबकि दूसरा जब कोई व्यक्ति अपने जीवन के दौरान विकलांगता प्राप्त करता है। अब ज़रा अपने आप के बारे में सोचिये की जब हम सब पूर्ण रूप से समर्थ हैं तब हम कार्यो में अपने 100% नहीं दे पाते हैं तो वो व्यक्ति जो स्वयं किसी न किसी रूप से असमर्थ है, उसकी मनोदशा क्या होती होगी जब वो अपना 100% देना चाहते हैं परन्तु चाहकर भी दे नहीं सकते? वो अपने आपको हमारे समाज में किस स्तर पर महसूस करते होंगे? जब वो इस बात से भलीभांति वाकिफ हैं की उनकी 'विकलांगता' को अक्सर कई लोग उनकी 'अक्षमता' के रूप में देखते हैं। तो क्या वे लोग वाकई असमर्थ होते हैं? तो कई लोग आपको ज़रूर मिलेंगे, जो इस बात से सहमत होगें। जान कर शायद आपको थोड़ा बुरा लगे पर हकीक़त तो यही है न। इसका एक बहुत बड़ा कारण जनमानस में निहित है जो विकलांग व्यक्तियों को आज भी एक दायित्व मानते हैं। जिस वजह से उन सभी दिव्यांग जनों के खिलाफ भेदभाव और उत्पीड़न तथा मुख्यधारा से उनका अलगाव होता है। वैसे तो भारत सरकार ने दिव्यांग जनों के विकास के लिए समय-समय पर कई उपाय किये हैं। जैसे विशेष योजना लागू करना, उनके हितों की रक्षा के लिए कानून बनाना (वर्तमान में विकलांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम 2016), इत्यादि। परन्तु उनकी दशा में पूर्णतः सुधार या कहें विकास होना अभी बहुत दूर है। उदाहरण के तौर पर, विकलांग व्यक्तियों के लिए ढांचागत, संस्थागत और व्यवहार संबंधी बाधाओं को दूर करने के मामले में भारत सरकार द्वारा सुगम्य भारत अभियान के तहत, सभी मंत्रालयों, विभागों को, अपने भवनों को विकलांग व्यक्तियों के लिए सुलभ बनाने का निर्देश दिए गए थे। परन्तु, अब भी भारत में अधिकांश भवन/कार्यालय विकलांगता के अनुकूल नहीं हैं। जिसके कुछ जीवंत उदाहरण आप सभी अपने-अपने कार्यालयों में आये दिन दिव्यांग जनों के साथ होने वाले व्यवहार में स्वयं देख सकते हैं, कि क्या हम सबकी तरह उन्हें भी सभी भौतिक सुविधायें आपके भवन, कार्यालय इत्यादि में उपलब्ध हैं? तो आप कहेंगे की ‘हाँ’ है तो सही। अब आप एक बार मेरे कहने पर उन सुविधाओं को फिर दोबारा से देखिएगा कि, क्यों किसी भी दिव्यांग जन को आप और हमारे जैसे लोगों के लिए बने शौचालयों का इस्तेमाल करना पड़ता है? मेरे अनुसार इसके दो पहलू हो सकते हैं कि वो हम सब की तरह अपने आपको हमारे जैसा दिखा कर वही इज़्ज़त और सम्मान पाना चाहते हैं जो लोग उन्हें दिव्यांग जन की वजह से नहीं देते या फिर दूसरा पहलू यह भी हो सकता हैं की आस पास उनकी ज़रूरत के हिसाब से वो सुविधा वहाँ उपलब्ध ही न हो। ज़रा, सोच कर

देखिये क्या कोई दिव्यांग जन उन्हीं भौतिक सुविधाओं के आभाव में आपके आस-पास तो नहीं जी रहा हैं? अगर इसका उत्तर 'हाँ' मिले तो कृपया उनके हक के लिए अगर आवाज न उठा सको तो कम से कम उनके साथ भेदभाव करना ज़रूर छोड़ दीजियेगा। क्योंकि केवल 'दिव्यांग' या 'विकलांग' शब्द के सकारात्मक प्रयोग से विकलांग व्यक्तियों के प्रति जनता की मानसिकता नहीं बदल पाएगी अपितु उसके लिए हमें अपना रवैया भी बदलना पड़ेगा। कोई भी कानून कागज़ पर तो बहुत अच्छा लगता है, परन्तु उसका उद्देश्य तब तक अधूरा है जब तक वो जनमानस के व्यवहार में न उतर जाये। अब आपके मन में सवाल आयेगा की हमें अपना रवैया बदलने की ज़रूरत क्यों हैं? तो चलिए आपके इस प्रश्न का उत्तर भी मैं ही आपको दे देता हूँ। आप कुछ पलों के लिए अपने आप को एक दिव्यांग की जगह पर रख कर देखें। मान लीजिये आप एक बस में सफर कर रहे हैं और आपको शौच जाना है तो क्या आप दूसरों की तरह बस से उतर कर कहीं भी फ्री हो सकते हैं? तो आप कहेंगे क्यों नहीं? पर यकीन मानिये सही जवाब होगा 'न'। क्या आपको पता हैं दिव्यांग लोग ऐसी परिस्तिथियों को टालने के लिए, दिन भर पानी ही नहीं पीते। अब सोचिये थोड़ी देर पानी न पीने पर प्यास से हमारी क्या हालत होती है? तो सोचिये पूरे दिन भर पानी न पीने पर उन सबका क्या हाल होता होगा? मुझे यहाँ यह बताने की ज़रूरत नहीं कि शरीर में पानी की कमी से कितनी बीमारियाँ हो सकती हैं। चलिए अब और आगे चलते हैं सोचिये आप व्हीलचेयर पर हैं और आपके अपने कार्यालय में आपके लिए शौचालय न हो और एक छोटी सी मूलभूत ज़रूरत के लिए आपको सामान्य शौचालय का इस्तेमाल करना पड़ता हो तो सोचिये, आपके आत्मसम्मान पर कितनी ठेस पहुँचेगी? ऊपर से जब दूसरे आपको हीनभावना से देखते हो, जब आपके सामने आपके जैसे दूसरे लोगों के बारे में नकारात्मक टिप्पणियाँ सुनने को मिलती हों, जब कोई भी व्यक्ति आपकी किसी अक्षमता की वजह से आपका मज़ाक उड़ाता हो और न जाने ऐसे कितने वाकये मिलेंगे आप सबको? अगर आप अपने आपको सामने वाले की जगह रखकर सिर्फ एक दिन ज़्यादा नहीं सिर्फ एक दिन जी कर देखें तो आपको पता चलेगा की हम सब अपने-अपने जीवन में इतना व्यस्त हैं कि उन लोगों की रोजमर्रा की समस्याएँ भी हम अपनी आँखों से नहीं देख पाते हैं। दिव्यांग जनों की यह सामाजिक चुनौती कोई अलग नहीं हैं बस हमें जरुरत हैं उनके प्रति अपने दृष्टिकोण को 'सहानुभूति' से 'अधिकार-आधारित' बनाने की। क्योंकि आज भी हमारे देश में लोगों का एक महत्वपूर्ण अनुपात, विकलांग व्यक्ति को 'सहानुभूति' और 'दया' की वस्तु

के रूप में देखता है जिससे देश में उनके साथ तीसरे वर्ग के नागरिक के रूप में व्यवहार होता है। अरे! वो तो पहले से ही जीवन के हर मोड़ पर इम्तिहानों से गुज़र कर हमारे बीच सम्मान पाने के लिए अपनी पहचान बनाने की कोशिश करते रहते हैं। तो मित्रों, क्या हम उस बदलाव की शुरुआत बन सकते हैं? क्या हम दिव्यांग जनों के प्रति अपने उत्तरदायित्व स्वरुप उनको बराबर का सम्मान देना शुरू कर सकते हैं? मैं यह नहीं कहता की सभी दिव्यांग जन आपके सम्मान और प्यार के हकदार हैं परन्तु जो वाकई हैं, आप कम से कम उनसे तो अपना प्यार बाँट ही सकते हैं न। कृपया मेरे इस लेख को किसी व्यक्ति विशेष के समर्थन या अन्य की निंदा स्वरुप न लेकर हमारे समाज में व्याप्त एक सामाजिक बुराई पर ध्यान आकर्षित करने की मेरी छोटी सी कोशिश के रुप में लें, यकीन मानिये इससे मुझे नहीं उन अनगिनत दिव्यांग जनों को ज़रुर ख़ुशी मिलेगी जो आज भी आप सबसे कुछ न कुछ उम्मीद लगाये बैठे हैं।

अमित कुमार,
लेखापरीक्षक

<u>ईश्वर तथा कर्म का नियम</u>

(श्रील ए.सी.भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद की पुस्तक प्रकृति के नियम से)

वेदों के रूप में ज्ञात विशाल प्राचीन संस्कृत लेखों में से 108 उपनिषदों में दार्शनिक सार समाहित हैं। और सभी उपनिषदों में, इशोपनिषद को सबसे प्रमुख माना जाता है। इशोपनिषद बतलाती है कि पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान “परिपूर्ण और सम्पूर्ण" हैं। सृजन,पालन तथा संहार की प्रक्रिया भौतिक जगत की उनकी सम्पूर्ण योजना का एक भाग है। इस भौतिक जगत में हर जीव में छह स्थायी अवस्थाओं में परिवर्तन होते हैं : जन्म, वृद्धि ,पालन, उप-उत्पादों का उत्पादन, ह्रास और विनाश। यह भौतिक प्रकृति का नियम है। एक फूल कली के रूप में पैदा होता है; फिर बढ़ता है, दो या तीन दिनों तक ताजा बना रहता है; बीज उत्पन्न करता है; धीरे-धीरे मुरझाता जाता है और अंततः नष्ट हो जाता है। आप इसे अपने तथाकथित भौतिक विज्ञान द्वारा नहीं रोक सकते। ऐसा करने का प्रयास करना अविद्या है।

कभी-कभी लोग मूर्खतावश सोचते हैं कि वैज्ञानिक प्रगति से मनुष्य अमर हो जाएगा। यह बकवास है। आप भौतिक नियमों को रोक नहीं सकते। इसलिए भगवद-गीता (7.14) में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि भौतिक शक्ति दुरत्यया है अर्थात इसे भौतिक उपायों से जीत पाना असंभव है।

भौतिक प्रकृति तीन गुणों वाली है। ये हैं- सत्व-गुण, रजो-गुण और तमो-गुण। गुण का अन्य अर्थ है "रस्सी"। रेशों को तीन तरह से बाँटकर रस्सी तैयार की जाती है। सर्वप्रथम रेशे को तीन छोटे तन्तुओं में बाँटा जाता है, फिर ऐसे तीन तन्तुओं को एक साथ बाँटा जाता है और अंत में ऐसे ओर तीन को एक साथ बाँट दिया जाता है। इस तरह रस्सी अत्यंत मजबूत बन जाती है। इसी प्रकार, प्रकृति के तीन गुणों - सतो, रजो और तमो- को मिला दिया जाता

है जिससे उनसे कोई न कोई उपोत्पाद बनता है। इसके बाद उन्हें पुन: मिलाया जाता है। इस तरह उन्हें असंख्य बार एक साथ 'बाँट' दिया जाता है|

इस तरह भौतिक शक्ति आपको ज़्यादा से ज़्यादा बांधती है। आप अपने प्रयासों से इस बंधन से, जो प-वर्ग कहलाता है, छूट नहीं सकते। प-वर्ग संस्कृत देवनागरी वर्णमाला में पाँचवाँ वर्ण-समूह है। प-वर्ग में प, फ, ब, भ, और म ये पांच अक्षर आते हैं। 'प' परिश्रम को सूचित करता है। इस जगत में हर जीव अपने उदार पोषण तथा अपना जीवन टिकाए रखने के लिये संघर्ष करता है। यह घोर जीवन संघर्ष कहलाता है। 'फ' फेन को बताने वाला है। जब घोड़ा कड़ी मेहनत करता है तो उसके मुंह से झाग (फेन) निकलता है। इसी तरह, जब हम कठिन परिश्रम करके थक जाते हैं, तो हमारी जीभ सूख जाती है और हमारे मुंह में झाग बनने लगता है। सारे व्यक्ति इन्द्रिय तृप्ति हेतु अत्याधिक श्रम कर रहे हैं ,यहाँ तक कि उनके मुंह से झाग निकलने लगता है। 'ब' बंधन के लिये आया है। हम अपने समस्त प्रयासों के बावजूद भी प्रकृति की भौतिक गुण-रूपी रस्सियों से बंधे रहते हैं| 'भ' भय को बताता है। भौतिक जीवन में मनुष्य भय की प्रज्वलित अग्नि में जलता रहता है क्योंकि कोई यह नहीं जानता कि आगे क्या होगा। 'म' मृत्यु का सूचक है| इस जगत में सुख और सुरक्षा के लिए हमारी सभी आशाएं और योजनाएं मृत्यु के द्वारा चौपट हो जाती हैं।

इस तरह कृष्णभावनामृत इस प-वर्ग प्रक्रिया को ध्वस्त कर देता है। दूसरे शब्दों में, कृष्णभावनामृत ग्रहण करने पर मनुष्य को अपवर्ग प्राप्त होता है, जिसमें न तो तीव्र जीवन संघर्ष रहता है, न भौतिक बंधन, न भय और न मृत्यु रहते हैं| पवर्ग भौतिक जगत का लक्षण बताने वाला है किन्तु जब उसमें 'अ' उपसर्ग जोड़ दिया जाता है तो उसका अर्थ होता है कि प-वर्ग ध्वस्त हो गया। कृष्ण भावनामृत आंदोलन अपवर्ग का मार्ग है |

दुर्भाग्यवश लोग इन बातों को नहीं जानते; फलत: वे अपना जीवन व्यर्थ गवाँ रहे हैं। यह आधुनिक सभ्यता आत्मघाती सभ्यता है। यहाँ लोग अपनी ही हत्या किये जा रहे हैं लोग खुद को मार रहे हैं क्योंकि वे नहीं जानते कि वास्तविक जीवन क्या है। वे मात्र पशुओं की तरह जी रहे हैं। पशु यह नहीं जानता कि जीवन क्या है? इसलिए वह क्रमिक विकास करते हुए प्रकृति के नियमों के अधीन कार्य करता है। किन्तु जब आपको यह मनुष्य का जीवन मिल जाता है तो आपकी ज़िम्मेदारी भिन्न तरीके से जीवित रहने की हो जाती है। यहीं पर आपके कृष्णभावनाभावित बनने और सभी समस्याओं को हल करने का अवसर मिलता है। किन्तु

यदि आप ऐसा नहीं करते- यदि आप जानवरों की तरह कार्य करते रहते हैं- तो आपको पुन: जन्म और मृत्यु के चक्र में पड़कर चौरासी लाख योनियों में से होकर देहान्तर करना पड़ेगा। पुन: मनुष्य जीवन पाने में लाखों वर्ष लग जायेंगे। उदाहरण के लिए, जिस सूर्य-प्रकाश को आप इस समय देख रहें हैं, उसे आप चौबीस घंटे बाद ही दोबारा देख सकेंगे। प्रकृति में हर वस्तु एक चक्र में घूमती है। अत: यदि आप खुद को ऊपर उठाने का यह मौका खो देते हैं, तो आपको देहान्तरण के चक्र में पुन: प्रवेश करना पड़ेगा। प्रकृति का नियम बड़ा प्रबल है।

कृष्णभावनामृत को तुरंत ही ग्रहण कर लेना आवश्यक है, क्योंकि हम यह नहीं जानते कि मृत्यु आने में कितना समय शेष रह गया है| जब इस शरीर में आपका समय समाप्त हो जायेगा, तो आपकी मृत्यु को रोक नहीं सकता। भौतिक प्रकृति की व्यवस्था इतनी प्रबल है कि आप यह नहीं कह सकते, "मुझे रहने दो।" वस्तुतः लोग कभी-कभी ऐसी याचना करते हैं। जब मैं इलाहाबाद में था तो मेरा एक पुराना मित्र, जो बहुत अमीर था, मर रहा था। उस समय उसने डॉक्टर से विनती की, "क्या आप मुझे कम से कम चार वर्ष और ज़िन्दा नहीं रख सकते? मैं अपनी कुछ योजनाओं को पूरा नहीं कर सका।" देखा आपने ! यह है मूर्खता, हर व्यक्ति सोचता है, "ओह, मुझे यह करना है, मुझे वह करना है। किन्तु न तो डॉक्टर और न ही वैज्ञानिक मृत्यु को रोक सकते हैं: "नहीं महोदय! चार वर्ष तो क्या, चार मिनट भी नहीं । आपको तुरंत जाना है"। यह है नियम। अत: इससे पूर्व कि वह क्षण आए मनुष्य को कृष्णभावनामृत का साक्षात्कार कर लेने के लिये सचेष्ट हो जाना चाहिए। आपको अति शीघ्र ही कृष्णभावनाभावित हो जाना चाहिए। इसके पूर्व कि आपकी अगली मृत्यु आए, आपको अपना कार्य समाप्त कर लेना चाहिए। यही बुद्धिमानी है, अन्यथा आपको हार का सामना करना पड़ेगा|

राजेश रंजन कुमार
स.ले.प.अ.

हिंदी की शालीनता एवं सौम्यता

भारत में सर्वप्रथम राष्ट्रीय शिक्षा "हिंदी की भाषा की शालीनता एवं सौम्यता नीति" 1968 में त्रिभाषा का सूत्र एक अधिकारिक दस्तावेज के रूप में वर्गीकृत किया गया था। त्रिभाषीय सूत्र मे तीन भाषाएं शामिल हैं जिसमें हिंदी, अंग्रेज़ी तथा एक क्षेत्रीय भाषा शामिल है। इसका मूल उद्देश्य हिंदी भाषा के विकास के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं का भी विकास किया जाना था। कोठारी आयोग की सिफारिश पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 में त्रिभाषा के सूत्र को स्वीकार कर लिया गया परंतु इसे धरातल पर नहीं लाया जा सका। किसी भी देश को एक सूत्र में पिरोने के लिए भाषा एकमात्र प्रमुख साधन है, हिंदी हमारे देश की प्रमुख भाषाओं में से एक है। हिंदी के साहित्यकारों, उपन्यासकारों तथा कवियों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हिंदी साहित्य के विकास में मुंशी प्रेमचंद, रामवृक्ष बेनीपुरी, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर इत्यादि के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। हिंदी के विकास का अर्थ है देश का विकास। भारत में विविध धर्म, संप्रदाय के लोग रहते हैं और प्रायः हर क्षेत्र की अपनी-अपनी भाषा कला और संस्कृति है। फिर भी भारत में विविधता में एकता है। इसमें हिंदी का योगदान महत्वपूर्ण है।

दुनिया के प्रायः सभी देशों की अपनी-अपनी भाषाएँ है और वे लोग अपनी भाषा पर गर्व करते हैं। भारतीयों को भी अपनी मातृभाषा हिंदी पर गर्व करना चाहिए। कुछ महान हस्तियों ने हिंदी के बारे में वक्तव्य दिया है जो निम्न हैः

हिंदी समस्त आर्यावृत की भाषा है "शारदाचरण मित्र"

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है। "कमलापति त्रिपाठी"

विभिन्न प्रकार के स्लोगन हिंदी में केन्द्रीय कार्यालयों/बैंकों में देखने को मिलते है, जैसे कि "हिंदी में काम करना आसान है, शुरूआत करके तो देखिए" हिंदी के विकास के लिए भारत सरकार के कार्यालयों में प्रतिवर्ष हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस का आयोजन सितबंर माह में किया जाता है। कार्यालय के अधिकारीगण/कर्मचारीगण हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित होने वाले कार्यक्रमों (हिंदी निबंध,अनुवाद, वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि) में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते हैं। भारत सरकार द्वारा इन आयोजनों पर लाखों-करोड़ों रूपये खर्च करने के बावजूद, राजभाषा हिंदी का पूर्ण विकास अभी तक नहीं हो पाया है। हिंदी एक सौम्य तथा सुगम भाषा है, इसकी वाणी में शालीनता होनी चाहिए। इससे पूर्व जब मैं 'ग' क्षेत्र स्थित गैंगटोंक के कार्यालय में कार्यरत था तो वहाँ के लोग हिंदी भाषी नहीं होते हुए भी हिंदी की शालीनता का पालन करते थे अर्थात "जाओ, आओ, खाओ" के स्थान पर "जाइए, आइए, खाइए" का प्रयोग करते थे। जब मेरा स्थानांतरण दिल्ली कार्यालय में हुआ तो मैनें अनुभव किया की दिल्ली के 'क' क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद भी यहाँ हिंदी की सौम्यता दर-दर ठोकरें खा रही है। कार्यालय में बड़े अथवा छोटे सभी कार्मिक खड़ी हिंदी का प्रयोग करते हैं अर्थात कर्माचारी/अधिकारी सभी अपनी बातों में जाओ, खाओ, लाओ आदि शब्दों का प्रयोग करते हैं। ऐसा नहीं है कि कर्मचारी/अधिकारी हिंदी की सौम्यता को नहीं समझते हैं, वह इसको समझते हैं, किंतु इसको बरकरार या इसका पालन नहीं करते।

एक बार मैं अपने पूर्व कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा आर्थिक एवं सेवा मंत्रालय नई दिल्ली की हिंदी बैठक में शामिल था। उस समय प्रधान निदेशक की अनुपस्थिति के कारण हमारे निदेशक महोदय (दक्षिण भारतीय) अध्यक्षता कर रहे थे। निदेशक महोदय ने कहा दिल्ली में लोग हिंदी भाषा का प्रयोग कंजूसी (अर्थात भाषा में सौम्यता का ध्यान नहीं रखते है) से करते हैं। यही कारण है कि दिल्ली 'क' क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद भी अपनी भाषा की सौम्यता खो रहा है। हिदीं हमारी राजभाषा ही नहीं अपितु हमारा अभिमान हैं। देश के हर नागरिक को हिंदी पर गर्व करना चाहिए। अगर हमारी भाषा में शालीनता और सौम्यता रहेगी तो हमारे संबंध भी सौहार्दपूर्ण होगें और यदि हमारे संबंध सौहार्दपूर्ण होगें तो हमारे लिए अपने विचारों का आदान-प्रदान करना सुगम होगा। सौहार्दपूर्ण माहौल हमारे बीच रिश्तों में मिठास लाएगा जिसके प्रभाव से हिंदी का पूर्णरूप से विकास संभव हो पाएगा। राजभाषा हिंदी हमारे नागरिकों के बीच एकता की कड़ी का काम करेगी। अतः हम सभी भारतवासियों को चाहिए कि वह सभी हिंदी भाषा में शालीनता और सौम्यता लायें और देश में हिंदी भाषा के माध्यम से

सौहार्दपूर्ण वातावरण का निर्माण करें। कवि राम प्रसाद विस्मिल की पंक्तियों के साथ आपको इस लेखक के दृष्टिकोण एवं पाठकों को उनके विचारों एवं दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ छोड़े जाते हैं।

हिंदी है हम, हिंदी है हम, वतन हैं।
हिंदोस्तां हमारा।

संध्या मिश्रा
स.ले.प.अ.

सहिष्णुता: एक सभ्य समाज की आवश्यकता

सहिष्णुता का अर्थ होता है अपने से भिन्न विचारों, मतों, मूल्यों, रहने के तरीकों आदि के अस्तित्व को समझना, उन्हें स्वीकार करना एवं उनका सम्मान करना। सहिष्णुता में सह-अस्तित्व का भाव होता है। उदाहरण के तौर पर, हम अपने घरों में बच्चों को समझाते हैं कि भाई-बहन आपस में सामान को बांटे, एक दूसरे की बातों पर लड़ाई न करें, छोटे की भूल को जल्दी माफ़ करें वगैरह-वगैरह। दूसरे अर्थ में हम अपने घरों में आपस में एक दूसरे के प्रति सहिष्णुता की भावना रखने पर ज़ोर देते हैं, ताकि आए दिन उनके बीच झगड़े न हों।

सहिष्णुता से न केवल शांतिपूर्ण तरीके से किसी बहस का हल निकाला जा सकता है बल्कि यह प्रत्येक इंसान को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भी देता है। अगर हम दूसरों के प्रति सहिष्णुता रखें तो वह व्यक्ति अपनी बातों को बिना डरे एवं खुल कर कह सकता है। ऐसे दो लोगों में जब खुले दिमाग से संवाद होता है, तो इससे ज्ञान के अर्जन एवं मानसिक विकास के साथ-साथ कई गलतफहमियाँ भी दूर होती हैं। यह दुखद बात है की इस समाज में बहुत सी रूढ़ीवादी धारणायें फैली हुई हैं। हम चंद लोगों के व्यवहार से या सुनी सुनाई बातों से समाज के एक समूह के प्रति विभिन्न धारणाएँ बना लेते हैं। यही अगर हम उसी समूह के प्रति सहिष्णुता रखें एवं उनकी बातों को सुने व समझे तो शायद वो अपनी इस रुढ़ीवादी धारणाओं से बाहर आ सकते हैं। हमारा विश्व अलग-अलग प्रकार के लोगों से बना है। हर इंसान दूसरे इंसान से किसी न किसी मायने में भिन्न है, चाहे वो खान-पान, रहने के तरीके, पहनने के तरीके या व्यवहार के मूल्य ही क्यों न हों। यह विश्व इन्हीं अंतरों के कारण देशों एवं राज्यों में बंटा है। एक तरफ

यह लोगों को समान होने की सहूलियत देता है परंतु यह लोगों के बीच अलगाव का कारण भी बन जाता है। ऐसे में उस समूह के प्रति यदि सहिष्णुता का भाव रखा जाए तो वह उनके देश के प्रति सकारात्मक विचार रखेगा। ऐसे आपस में सहिष्णु हो कर हम उस समूह के व्यक्ति से संवाद कर, कई नई बातों को जान सकते हैं।

सहिष्णुता के मामले में हमारा भारत हमारे ज्ञात इतिहास से ही सहिष्णु रहा है और तत्कालीन विश्व के लिए उदाहरण बन सकता है। क्योंकि यहाँ सदियों से विश्व के विभिन्न लोगों ने आकर इसको अपना निवास बनाया है और भारत ने सभी का आलिंगन किया है। हमारे देश में लोगो के बीच अंतर होने के बावजूद भी लोगों में सहिष्णुता का भाव आसानी से मिल जाता है। परन्तु कई बार चंद लोगो की बातो में आकर यह भाव अपना महत्व खो भी देता है। यदि हम अपने भारत की सदियों पुरानी सहिष्णुता से रहने के मूल्यों का त्याग कर देंगे तो हमारे भारतवासी अपने ही घर में रहकर पराया महसूस करेंगें। ऐसे में देश के पूर्ण विकास में बाधा आ सकती है। किसी भी देश की प्रगति उसके सकल घरेलू उत्पाद से ही नहीं मापी जाती बल्कि उसके निवासियों के जीवन की गुणवत्ता, मानव विकास सूचकांक, ख़ुशी सूचकांक आदि से भी देश के विकास को मापा जा सकता है। लोगों के बीच सहिष्णुता भी इस विकास के लिए महत्वपूर्ण है। अगर हम सह-अस्तित्व को महत्व देते हैं तथा सभी के भिन्न विचारो एवं मतों को समझते व सम्मान करते हैं, तो यह कार्यस्थल के परिवेश को खुशनुमा बनाता है, जिससे न केवल कर्मचारी सुरक्षित महसूस करता है बल्कि वह ज़्यादा लगन एवं परिश्रम से काम भी करता है। इससे पूरे समाज एवं देश की तरक्की होती है।

अतः यदि हमें एक सभ्य समाज का निर्माण करना है तो सभी व्यक्तियों को अपने विचारों को व्यक्त करने एवं अपनी पसंन्द की जीवन शैली से जीने देना चाहिए। इसके लिए हमें अपने-अपने घरों से ही शुरुआत करनी पड़ेगी। हमें अपने बच्चों को अपने भाई-बहनों के साथ ही नहीं बल्कि समाज के हर इंसान के साथ सहिष्णु होकर रहने की सीख देनी चाहिए। इन छोटे बदलावों से ही समाज आगे चलकर विकास की तरफ बढ़ सकता है।

राजेश रंजन
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

माँ

बहुत खूबसूरत हो तुम, बहुत खूबसूरत हो तुम .....
जो उँगली पकड़ के चलना सिखाया
जो हर मोड़ पे संभलना सिखाया।
वो पहली जरूरत हो तुम ...
बहुत खूबसूरत हो तुम, बहुत खूबसूरत हो तुम .....
जो माथे पे तिलक लगाती है हमको
जो बुरी नज़र से बचाती है हमको।
आँखों का तारा तुम्हारा बनूँगा
ढलती उमर का सहारा बनूँगा।
मेरी सारी अमानत हो तुम ...
बहुत खूबसूरत हो तुम, बहुत खूबसूरत हो तुम .....
मैं कैसे उतारूँगा कर्जा तुम्हारा
खुदा से भी बढ़कर है दर्जा तुम्हारा।
निगाहों में मेरी सूरत है तेरी
तुम्हारे बिना ज़िन्दगी है अधूरी।
हर सफर का मुहूर्त हो तुम ...
बहुत खूबसूरत हो तुम, बहुत खूबसूरत हो तुम .....

है ममता का सागर ये आँचल तुम्हारा
जैसे करती है कलकल नदियों की धारा।
तुम्हीं पे लूटा दूँ ये जीवन सारा
कभी जो कर दो गर तुम इशारा।
किसी देवी की मूरत हो तुम ...
बहुत खूबसूरत हो तुम, बहुत खूबसूरत हो तुम .....

मनोज मधुकर कस्तूर
व.ले.प.अ.

आओ हम सब संवेदनशील बने

आओ हम सब मिलकर संवेदनशील बने,
हम हिन्दू, मुस्लिम, इसाई से पहले भारतीय बने,
हम अपनों से छोटे और गरीबों के लिए उदार बने,
ऐसे समाज मे जहाँ सबको स्थान और सम्मान मिले,
आओ मिलकर ऐसे भारतवर्ष का उज्ज्वल भविष्य बुनें,

कोई गरीब भूखा न रहे, कोई बुज़ुर्ग ठण्ड से आह न भरे,
कोई अपनी पहचान, वेशभूषा की वजह से पिछड़ा न रहे,
सभी प्रांतो के लोगों को, एक समान अधिकार मिले,
हमारे दिव्यांग साथियों का सम्मान उन्हें पुनः प्रदान करें,
अपने इस भारतवर्ष में, आओ हम सभी संवेदनशील बने,

सभी भारतीय अलग-अलग भाषाओँ में पिरोये हुये मोती हैं,
जो संकट की घड़ी में बनते भारतवर्ष की आँखों की नवज्योति हैं,
फिर भी मेरे देश में भेदभाव अभी तक जीवित क्यों है,
जब ईश्वर के लिए सभी बराबर, तो ये सामाजिक दूरियाँ क्यों है,
क्यों कहीं ऊँच नीच रहे, क्यों हम अपनी तुलना एक दूसरे से करें,
आओ भारतीय समाज में फैली हर बुराई को मिलकर दूर करें,
आओ हम सब मिलकर संवेदनशील बने...... ।।

रणजीत कुमार स्वाई
स.ले.प.अ.

<u>वो सात समंदर पार</u>

आओ हम चले वो सात समंदर पार,
सुना जहाँ है दूसरी दुनिया के द्वार,
दूसरी या कहे आज के स्वर्ग का द्वार
शान्ति, तरक्की और खुशहाली जहाँ हो,
छल, कपट, धोखे का नामोनिशान न हो,
हर तरफ प्रेम और सौहार्द की ही परिभाषा हो,
तो आओ हम चलें वो सात समंदर पर...
उठती हर लहर जहाँ छूती है आशा के किनारों को,
मिले शीतल पुष्प सी सेज जहाँ हर कदमों को,
न रहे कोई द्वेष न बैर बस भाईचारा हो,
जहाँ नफरत नहीं बस प्यार का ही बसेरा हो,
जहाँ हर द्वार पर खुशियों का ही डेरा हो,
जहाँ मिलता सब मुश्किलों से छुटकारा हो,
तो आओ हम चले वो सात समंदर पर...
इस सफ़र में सात समंदर पार करने होंगे,
पर घबराना नहीं, सभी अधूरे सपने पूरे होंगे,
ये सफ़र तो बस सात समंदर का है...
सवाल तो बस खुद को समझने का है,
देखो, परखो और जानो ये मसला सिर्फ सोच का है,
तो आओ हम सब मिलकर चलें वो सात समंदर पर...
सुना जहाँ है दूसरी दुनिया के द्वार....।।

विशिष्ट पल

आतंकवाद विरोधी दिवस पर कार्यालय कार्मिकों को शपथ दिलवाते महानिदेशक महोदय

हिंदी कार्यशाला की कुछ झलकियाँ

हिंदी पखवाड़ा 2022 का शुभारम्भ दिनांक

हिंदी पखवाड़ा 2022, में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेते कार्यालय कर्मी

सूरत (गुजरात) में आयोजित द्वितीय राजभाषा सम्मेलन की कुछ झलकियाँ

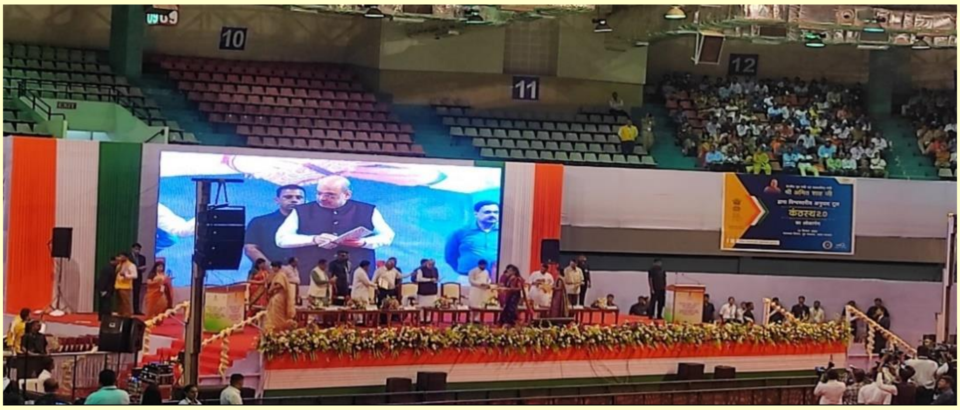

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

आपके प्रशंसा पत्र

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले0 एवं हक0) उत्तराखण्ड
"महालेखाकार भवन", कौलागढ़, देहरादून–248195

पत्रांक:26 / हि0प्र0 / 2021–22 / विभागीय पत्रिकाएं / पावती / 387 दिनांक 21.12.2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
महानिदेशक लेखापरीक्षा (इंफास्ट्रक्चर), दिल्ली का कार्यालय,
"ए" विंग, तृतीय तल, इंद्रप्रस्थ भवन, नई दिल्ली – 110002

विषय:–वार्षिक हिन्दी पत्रिका "संवाद" के तृतीय अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका "संवाद" वर्ष 2021 का तृतीय अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ विशेष रूप से सुश्री मीना कुमारी की "वक्त", सुश्री आरती शर्मा की "नौशेरा का शेर – ब्रिगेडियर उस्मान अली", श्री धर्मवीर की "दोस्ती की जरूरत", श्री वेद प्रकाश की "इंसानीयत" आदि ज्ञानवर्धक व सराहनीय हैं।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखाधिकारी / हिंदी प्रकोष्ठ

SAO/Adm-III/IV
Vicky 28/12
Sr. Adhikari, AAO Adm-III

महानिदेशक लेखापरीक्षा (इन्फ्रास्ट्रक्चर), दिल्ली-2
3149
28 DEC 2021
Office of the DGA (Infrastructure), Delhi-2

245844
DY-28/12/21

भारत सरकार/Government of India

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक), ओड़िशा, भुवनेश्वर-751001

O/o the Accountant General (A&E), Odisha, Bhubaneswar-751001

सं-हि.प्र/प.प्र./2021/84 दिनांक : 25.11.2021

सेवा में,

संपादक "संवाद",
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (इंफ्रास्ट्रक्टर), दिल्ली "ए" विंग,
तृतीय तल, इंद्रप्रस्थ भवन, नई दिल्ली-110002

विषय: वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका "संवाद" के तृतीय अंक की प्रतिक्रिया का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका "संवाद" के तृतीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा अत्यंत ही आकर्षक है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की एवं सराहनीय है। श्री मनोज मधुकर कस्तूर की रचना "सम्मान गैरों में मिले अपनों का...", सुश्री मीना कुमारी की रचना "कर्म", श्री वेद प्रकाश की रचना "इंसानियत" एवं सुश्री आरती की रचना "अभिव्यक्ति है भाषा" विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी/प्रभारी

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै का कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT (CENTRAL) CHENNAI

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिंदी अनुभाग/14-02/2021-22/145 दिनांक:15.12.2021

सेवा में ,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
वरिष्ठ लेखापरीक्षा (इंफ्रास्ट्रक्चर) दिल्ली का कार्यालय,
ए विंग, तृतीय तल, इंद्रप्रस्थ भवन,
नई दिल्ली- 110 002

विषय : हिंदी ई-पत्रिका **'संवाद'** के तृतीय अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

महोदय / महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई- पत्रिका **'संवाद'** का तृतीय अंक इस कार्यालय में ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं सटीक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय, प्रेरक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। सभी रचनाएं एक से बढ़कर एक है। श्री मनोज मधुकर कस्तुर कृत **"अगर यह सच है"** रोचक, सुश्री मीना कुमारी कृत **"वक्त"** रुचिपूर्ण, एवं श्रीमती आरती शर्मा कृत **"नौसेरा का शेर ब्रिगेडियर उस्मान अली"** देशभक्ती से ओत-प्रोत हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
डी. के. रामकुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
S/6

3140
20 DEC 2021

242294
21/12/21

लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सालै, तेनामपेट, चेन्नै - 600 018. "LEKHA PARIKSHA BHAVAN", 361, ANNA SALAI, TEYNAMPET, CHENNAI - 600 018.
Phone : 91-044 - 2431 6406, Fax: 91- 044 - 24338924, E.mail : dagacchennai@cag.gov.in

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा
द्वितीय बहुतलीय कार्यालय भवन, छठा तल, निजाम पैलेस,
बोस रोड .सी.जे.ए 4/234, कोलकाता020 700-
फोनः ,13/12/4111/2289-033फैक्सः 4060-2289-033
ई मेलः-bresdkolkata@cag.gov.in

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

30 NOV 2021

संख्या हि.अ./1(17)21/2012-13/2015-16/99 **दिनांकः-26.11.2021**

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, (इंफ्रास्ट्रक्चर),
दिल्ली का कार्यालय,
"ए" विंग, तृतीय तल, इंद्रप्रस्थ भवन,
नई दिल्लीः- 110 002

विषयः- हिंदी के वार्षिक ई-पत्रिका "संवाद" के तृतीय अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका "संवाद" के तृतीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर श्री मनोज मधुकर कस्तुर जी की कविता '**सम्मान गैरों में मिले अपनों का**', श्री मनोज मधुकर कस्तुर जी का लेख '**वो अनुभव मायानगरी मुम्बई फिल्मसिटी के**', सुश्री मीना कुमारी जी की कविता '**कर्म**', श्रीमती आरती शर्मा जी का आलेख '**नौशेरा का शेर-ब्रिगेडियर उस्मान अली**', श्री राजेश रानल जी की कविता '**वर्णमाला का क्रम से कवितामय प्रयोग**' और सुश्री आरती जी का लेख '**महामारी और मानसिक स्वास्थ्य**' अत्यन्त ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय है।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र है। आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "संवाद" इसी तरह निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यह हमारी शुभकामना है।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

3117
08 DEC 2021

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला–171 003

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

सं० हि०क० / ले० व ह० / पत्रिका समीक्षा / 2021-22 / 145 दिनांक:-25-11-2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (इंफ्रास्टक्चर),
दिल्ली का कार्यालय , तृतीय तल, इन्द्रप्रस्थ भवन,
नई दिल्ली–110002

विषय: ' संवाद ' हिंदी ई–पत्रिका तृतीय –सस्करण 2021 के प्रेषण से सम्बधिंत ।

महोदय,

आपके कार्यालय की ' संवाद ' हिंदी ई–पत्रिका तृतीय–सस्करण 2021 की प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिये आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
(हिन्दी कक्ष)

गार्टन कैसल बिल्डिंग, शिमला–171 003 दूरभाष: 0177–2652502 / 2651033, फैक्स: 0177–2651743
Gorton Castle Building, Shimla-171 003 Phone: 0177-2652502/2651033, Fax: 0177-2651743
E-mail:agaeHimachalpradesh@cag.gov.in

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर-751017(ओड़िशा)

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2021/121 दिनांक-05.11.2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ प्रशासन,
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (इन्फ्रास्ट्रक्चर),
ए. विंग, तृतीय तल, इंद्रप्रस्थ भवन,
नई दिल्ली-110002
ईमेल- pdainfradl@cag.gov.in

विषय- वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका **"संवाद"** के **तृतीय** अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित वार्षिक ई-पत्रिका **"संवाद"** का **तृतीय** अंक प्राप्त हुआ। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर श्री **मनोज मधुकर कस्तूर**, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी द्वारा रचित लेख **'अगर यह सच है.....'** हमारे अंतरात्मा को विचलित करती है। इसके अलावा श्री **वेद प्रकाश**, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी द्वारा रचित कविता **'इंसानियत'** हमें अच्छी लगी।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

महानिदेशक लेखापरीक्षा (इन्फ्रास्ट्रक्चर), दिल्ली-2
3089
29 NOV 2021
Office of the DGA (Infrastructure), Delhi-2

भवदीय,

(दीपक कुमार दास)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा

Admn. Gen. Diary / 1224
01.12.2021

दूरभाष सं.-0674-2303511 ई-मेल- pdarlyecoastr@cag.gov.in / rajbhasha.pda@gmail.com

स्पीड पोस्ट

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), UTTARAKHAND

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पत्रांक:हिन्दी/सामान्य-विविध/25/2021-2022/208
दिनांक: 01.10.2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (इन्फ्रास्ट्रक्चर),
ए - विंग, तृतीय तल, इन्द्रप्रस्थ भवन
नई दिल्ली - 110002

2421

विषय: वार्षिक हिंदी पत्रिका "संवाद" के तृतीय संस्करण (2021) की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका "संवाद" के तृतीय संस्करण (2021) की ई-पत्रिका ई-मेल द्वारा प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद, पत्रिका का सम्पादन सराहनीय है। पत्रिका में सभी लेख एवं रचनाएं प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं सारगर्भित, उच्च स्तरीय एवं बेमिसाल हैं। इनमें से जो रचनाएं अति उत्तम लगीं, वो हैं - "अगर यह सच है....", "वो अनुभव मायानगरी मुंबई फिल्मसिटी के", "पिता", "इंसानियत" एवं "महामारी और मानसिक स्वस्थ्य" आदि।

आपकी यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए अत्यंत सराहनीय प्रयास है, जिसकी निरंतर प्रगति एवं सफलता के लिए पत्रिका समूह के संपादन एवं प्रकाशन मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

भवदीय

(हस्ताक्षर) 01/11/21
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (इन्फ्रास्ट्रक्चर), दिल्ली
3046
08 NOV 2021

'महालेखाकार भवन', कौलागढ़, देहरादून - 248195 'Mahalekhakar Bhawan', Kaulagarh, Dehradun - 248195
दूरभाष / Phone : 0135 - 2970870 फैक्स / Fax : 0135 - 2970871, ई-मेल / E-mail : agauuttarakhand@cag.gov.in

Admn. Gen. Diary / 1646
08-11-2021

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
झारखण्ड का कार्यालय, राँची - 834002

सत्यमेव जयते

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT),
JHARKHAND, RANCHI - 834002

दिनांक/Date ....

पत्रांक- हिन्दी प्रकोष्ठ/ले.प./2021-22/ 433 दिनांक-29/10/2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/ प्रशासन (हिन्दी)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा(इंफ्रास्ट्रक्चर),
'ए' विंग, तृतीय तल,
इंद्रप्रस्थ भवन, नई दिल्ली-110002

विषय- हिन्दी पत्रिका "संवाद" के तृतीय अंक की ई-प्रति की प्राप्ति का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित **हिन्दी पत्रिका "संवाद"** के **तृतीय अंक** की प्राप्ति हुई है | पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ अत्यंत ही उच्चत्तर श्रेणी की हैं | विशेषकर श्रीमती आरती शर्मा जी की "नौशेरा का शेर"- ब्रिगेडियर उस्मान अली, डॉ. अनुराधा जोशी जी की पिता, श्री वेद प्रकाश जी की इंसानियत, सुश्री आरती जी की अभिव्यक्ति है भाषा आदि रचनाएं प्रशंसनीय है।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

3043
02 NOV 2021
Office of the DGA (Infrastructure), Delhi-2

भवदीय,

विकास
28/10/2021

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी प्रकोष्ठ

पत्रिका

दूरभाष/Telephone : 0651-2411670/2413690 फैक्स/Fax : 0651-2412517/2413701 ई-मेल/e-mail : agaujharkhand@cag.gov.in

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा - II
पश्चिम बंगाल
Office of the Pr. Accountant General, Audit -II
West Bengal

संख्या :- हिन्दी कक्ष/पत्रिका पावती/38 **दिनांक:- / /2021**

28 OCT 2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
महानिदेशक लेखापरीक्षा (इन्फ्रास्ट्रक्चर), दिल्ली का कार्यालय
'ए' विंग, तृतीय तल, इंद्रप्रस्थ भवन,
नई दिल्ली- 110002

विषयः "संवाद" हिन्दी ई- पत्रिका तृतीय संस्करण 2021 के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी ई-पत्रिका 'संवाद' के तृतीय संस्करण की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण, पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ-ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षणीय है। कविताएँ एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

महानिदेशक लेखापरीक्षा (इन्फ्रास्ट्रक्चर), दिल्ली-2
3042
02 NOV 2021

भवदीय,

व. अधिकारी
26/10/21

व.लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

Vicky
3/11

Sr. Abhinav AAO
Adm - IV

सी.जी.ओ.कम्प्लेक्स,डी.एफ.ब्लॉक, साल्टलेक,कोलकाता-700 064
3rd MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata – 700 064.
Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2337-7854, e-mail:agauwestbengal2@cag.gov.in

वरि० आरती
अधि
02.11.21

Admn. Gen. Diary/1050
8/11/2021

S.P

संख्या No. हि० अ०/ले० प०/ प्रतिभाव/ अ/ 21-22/ 199

भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय, महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार
वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना-800 001
Indian Audit & Accounts Department
Office of the Accountant General (Audit), Bihar
Birchand Patel Marg, Patna-800 001

दिनांक/Date : 28/10/2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(प्रशासन)

महानिदेशक लेखापरीक्षा(इंफ्रास्ट्रक्चर),दिल्ली का कार्यालय

'ए' विंग,तृतीय तल,इंद्रप्रस्थ भवन,नई दिल्ली-110002

विषय-: हिंदी पत्रिका "संवाद"के तृतीय संस्करण का प्रतिभाव।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "संवाद" के तृतीय संस्करण की ई-प्रति मिली,एतदर्थ बधाई एवं धन्यवाद।पत्रिका का आवरण पृष्ठ,साज-सज्जा एवम मुद्रण उत्कृष्ट है।पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ स्तरीय,सारगर्भित एवम पठनीय हैं।इस हेतु सभी रचनाकारों को साधुवाद।

राजभाषा हिंदी के प्रचार -प्रसार में "संवाद" की भूमिका महत्वपूर्ण है।इसका भविष्य और उज्ज्वल हो इसी कामना के साथ समस्त सम्पदकीय मण्डल को पुनः बधाई एवं शुभकामनाएं।

भवदीय

वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)

महानिदेशक लेखापरीक्षा (इन्फ्रास्ट्रक्चर), दिल्ली-2
3052
15 NOV 2021

दूरभाष/Phone - 2221226, 2221941, 2223725, 2223194, 2506091, 2506283 ई.पी.ए.बी.एक्स./EPABX-2223757, 2228320
फैक्स./Fax : 0612-250 6223, 2506207 ई.मेल/E-mail-agaubihar@cag.gov.in पो० बॉक्स/P.B.No.-47

कार्यालय
महालेखाकार (लेखापरीक्षा)–II, महाराष्ट्र, नागपुर
OFFICE OF THE
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)-II, MAHARASHTRA, NAGPUR

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संख्या.राजभाषा 8(II)/2021-22/जा.क्र.180
दिनांक:29/10/2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
महानिदेशक लेखापरीक्षा ((इंफ्रास्ट्रक्चर),
दिल्ली कार्यालय, 'ए' विंग, तृतीय तल, इंद्रप्रस्थ भवन,
नई दिल्ली-110002

विषय : हिंदी ई-पत्रिका "संवाद" के तृतीय अंक पर प्रतिक्रिया संबंधी।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी ई-पत्रिका "संवाद" के तृतीय अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद!

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। विशेषकर सुश्री आरती शर्मा, व. लेखापरीक्षा अधिकारी का लेख 'नौशेरा का शेर-ब्रिगेडियर उस्मान अली', डॉ अनुराधा जोशी, क. अनुवादक की रचना 'पिता' तथा श्री वेद प्रकाश, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी की रचना 'बरसात' उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं । पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,
25/10/21
(श्रीमती पी.एस.सर्मा)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

Uday 1/11/21
Ms. Aarti, HT
Adm -IV

महानिदेशक लेखापरीक्षा (इन्फ्रास्ट्रक्चर), दिल्ली
3036
01 NOV 2021
Office of the DG (Infrastructure), Delhi-2

'लेखापरीक्षा भवन', डाक थैली क्र.220, सिव्हिल लाईन्स, नागपुर – 440001
दूरभाष/Telephone - 0712-2564506 To 2564510
फॅक्स/Fax - 0712-2524130
'Audit Bhavan', Post Bag No. 220, Civil Lines, Nagpur-440001
website : cag.gov.in/ag/nagpur/en
e-mail - agaumaharashtra2@cag.gov.in

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest